सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/
विदेश में (वार्षिक)	30 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जुलाई, 2010 वर्ष 09 अंक 5

हुब्बे हक़

हुब्बे हक़ में डूब कर
पाजा हक़ीक़ी ज़िन्दगी

हुब्बे हक़ के वास्ते
तू कर नबी की पैरवी

हुब्बे मुहम्मद के बिना
मोमिन तो हो सकता नहीं

पैरवी बिन हुब्ब के
दअ़वे में तू सच्चा नहीं

या रब नबी पे रहमत
तेरी रहे सदा

तेरा सलाम उन पेर
उतरा करे सदा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Visoin Computer- +91 94510 64588, +91 90260 43858

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
इस्लाहे मुआशरा और हमारी ज़िम्मेदारियाँ	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जग नायक	मौ0 (स0) मु0 राबे हसनी नदवी	7
ग़ैर इस्लामी अख़्लाक़	मौ0 स0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	9
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मु0 ज़फर आलम नदवी	12
नमाज़	नज़र रायबरेलवी	13
मुस्लिम समाज	मौ0 स0 मु0 राबे हसनी नदवी	14
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्लाह	17
शाबाश फ़ैसल	एम0 हसन अंसारी	19
दअवते वलीमा	मौ0 मुजीबुल्लाह नदवी	20
इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?	अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी	21
चंगेज़ ख़ान	इरशाद अली ख़ान	23
ख़वातीने इस्लाम	मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी	25
आर टी ई ऐक्ट 2009	एम0 हसन अंसारी	28
इस्लाम में दीन व दुनिया अलग–अलग नहीं		30
डायबिटीज की होमियोपैथिक चिकित्सा	डॉ0 महेश प्रसाद गुप्ता	31
कैसे रहें मधुमेह के साथ	डॉ0 दीपक भाटिया	32
इस्लाम का विशेष दृष्टिकोण		34
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	35
तहरीके नदवतुल उलमा और दीन व मिल्लत	मौ0 स0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी	38
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुरआन की शिक्षा

- मौ० शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बक़रह, अनुवाद :–

उनकी मिसाल उस शख़्स की है जिसने आग जलाई फिर जब रौशन कर दिया आग ने उस के आस पास को, मिटा दी अल्लाह ने उन की रौशनी और छोड़ा उन को अंधेरों में कि कुछ नहीं देखते[1](17)। बहरे हैं, गूंगे हैं अंधे हैं, सो वह नहीं लौटेंगे[2](18)। उन की मिसाल ऐसी है जैसे जोर से पानी बरस रहा हो आसमान से, उस में अंधेरे हैं, गरज और बिजली, देते हैं उंगलियाँ अपने कानों में मारे कड़क के मौत के डर से और अल्लाह अहाता करने वाला है काफिरों को[3](19)। करीब है कि बिजली उचक ले उन की आँखे, जब चमकती है उन पर तो चलने लगते हैं उस की रौशनी में और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं और अगर चाहे अल्लाह ले जाए उन के कान और आँखें बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर हैं[4](20)।

तफ़सीर

1– .यानी मुनाफिकों की मिसाल ऐसी ही है कि कोई अंधेरी घनघोर रात में आग रौशन करे जंगल में रास्ता देखने को और जब आग रौशन हो गई रास्ता नज़र आने लगा तो अल्लाह तआला ने उंसे बुझा दिया और अंधेरी रात में जंगल में खड़ा रह गया कि कुछ नज़र नहीं आता, ऐसे ही मुनाफिक़ीन ने मुसलमानों के ख़ौफ से कलम–ए– शहादत की रौशनी से काम लेना चाहा मगर सरे दस्त कुछ हक़ीर (तुच्छ) फाइदा (जान व माल की हिफाजत का) उठा पाए थे कि कलम–ए–शहादत और मुनाफअ़ (लाभ) सब नेस्त व नाबूद (नष्ट भ्रष्ट) हो गये और मरते ही अज़ाबे अलीम (कष्ट दायक दण्ड) में मुबतला हो गये।

2– यानी बहरे हैं जो सच्ची बात नहीं सुनते, गूंगे हैं सच्ची बात नहीं कहते, अन्धे हैं जो अपने नफ़ा नुक़सान को नहीं देखते जो शख़्स बहरा भी हो और गूंगा भी हो वह किस तरह राह पर आए? सिर्फ अन्धा हो तो किसी को पुकारे किसी की बात सुने। तो अब उन से हरगिज उम्मीद नहीं कि यह हक़ की तरफ़ लौटें।

3– दूसरी मिसाल इन मुनाफि–कीन की उन लोगों की सी है कि उन पर आसमान से पानी बहुत ज़ोर–शोर से गिर रहा हो, और कई तरह की तारीकी (अंधेरा) उस में हो जैसे बादल बहुत गहरा है बारिश भी मोसलाधार है, रात भी अंधेरी है, गहरे अंधेरे के साथ बिज़ली की कड़क और चमक भी ऐसी हौलनाक (भयंकर) है कि वह लोग मौत के डर से कानों में उंगलियाँ देते है कि बिजली की कड़क से दम न निकल जाए। इसी तरह मुनाफिकीन शरीअत की पाबन्दी और मुनाफिकीन के अहक़ाम सुन कर और अपनी ख्वारी, जिल्लत (अपमान) देखकर फिर दुनिया की मसलिहतों को खयाल कर के अजीब कशमकश और ख़ौफ व परेशानी में मुबतला हैं और अपनी बेहूदा तदबीरो से अपना बचाव करना चाहते हैं मगर हक़ तआला की कुदरत हर तरफ से काफिरों को घेरे हुए है उस की पकड़ और उस के अज़ाब से बच नहीं सकते।

4– हासिल यह है कि मुनाफि–कीन अपनी ज़लालत (पथ भ्रष्टा) और जुलुमाती खयाल (पथ भ्रष्ट कल्पनाओं) में मुबतला हैं लेकिन जब नूरे इस्लाम के गलबे और मुअ़जिजात को देखते हैं और इस्लाम की पाबन्दी और मुनाफिकीन के लिये अज़ाब की बात शरीअ़त से सुनते हैं तो मुतनब्बेह (सावधान) हो कर जाहिर में सिराते मुस्तक़ीम की तरफ मुतवज्जेह हो जाते हैं और जब कोई दुन्यावी (साँसरिक) अज़ीयत व मशक्कत (कष्ट) नज़र आती है कुफ्र पर पड़ जाते हैं जैसे सख्त बारिश, अंधेरे में बिजली चमकी तो कदम रोक लिया खड़े हो गये मगर चूंकि अल्लाह को सब का इल्म है और उस की कुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं है तो ऐसे हीलों और तदंबीरों से क्या काम निकल सकता है।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनुवाद : अताउल्लाह सिद्दीकी

अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबू हुजैफह (रज़ि0) और वहब (रज़ि0) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्म को देखा, आप एक रेतीली जगह पर सुर्ख़ चमड़े के ख़ेमे में तशरीफ़ फरमा थे मैं ने देखा कि हज़रत बिलाल (रज़ि0), हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वजू करा के वजू का बचा हुआ पानी लाए तो बअज़ लोगों ने अपने ऊपर उस को छिड़क लिया और जिस को न मिला वह उन छिड़कने वालों के हाथों से पानी की तरी ले कर तबर्रुकन अपने बदन प़र लगाता था, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए, आपके ऊपर सुर्ख रंग का जोड़ा था, गोया मैं इस वक़्त भी आप की सफेद पिण्डलियों को देख रहा हूँ, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वजू किया और हज़रत बिलाल (रज़ि0) ने अज़ान दी। हज़रत बिलाल (रज़ि0) दाएं और बाएं जानिब मुंह करके "हय्या अलस्सलाह, हय्या अलल फलाह" कह रहे थे और मैं उन के चेहरे को देख रहा था, फिर आप के लिए नेजा गाड़ा गया और आप ने आगे होकर नमाज़ पढ़ाई। कुत्ते और गधे नमाज़ के सामने से गुजरते थे और कोई उन को रोकता न था।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू रिमसह रफाअह अल तमीमी (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दो सब्ज कपड़े पहने हुए देखा है। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फत्ह मक्का के दिन मक्का में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त आप सियाह अमामह बान्धे हुए थे।

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

हज़रत अबूसईद उमर बिन हरीस (रज़ि0) से रिवायत है कि गोया मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देख रहा हूँ, आप सियाह अमामह बान्धे हुए और उस के दोनों किनारे आप के दोनों कन्धों के दरमियान लटके हुए थे। (मुस्लिम)

एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लोगों को खुत्बह सुना रहे थे उस वक़्त आप के सर मुबारक पर स्याह अमामह था।

कफन मुबारक के कपड़े

हज़रत आइशा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तीन सफेद सूती कपड़ों में कफनाया गया, जो एक दिहात (सहवल) के बने हुए थे। उस में न अमामह था न कमीस।

(मुस्लिम, बुख़ारी)

कजावे का नकशह

हज़रत आइशा (रज़ि0) से रिवायत है कि एक रोज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सुबह के वक़्त बाहर तशरीफ़ ले गए, आप के ऊपर स्याह बालों से बना हुआ कम्बल था जिस में बजाए फूल और बूटों के कजावे का नकशा था।

(मुस्लिम)

कुर्ता पसन्दीदा लिबास

हज़रत उम्मे सलमह (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तमाम कपड़ों में कुर्ता ज़्यादह पसन्द था।

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

हज़रत असमा (रज़ि0) बिन्त यजीद अल अन्सारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुर्तों की आसतीन पहुँचों तक होती थी। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

तंग आस्तीनों वाला जुब्बा

हज़रत मुगीरह (रज़ि0) बिन शोअबह से रिवायत है कि एक रात मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ सफर में था, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया तुम्हारे पास कुछ पानी है, मैंने अर्ज किया जी हाँ, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी सवारी से उतर पड़े और एक तरफ को चले गए, शेष पृष्ठ 16

इस्लाहे मुआशरा और हमारी ज़िम्मेदारियाँ

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

आज हमारे मुआशरे में बड़ी खराबियां आ गई हैं। दुन्या के कामों में भी और दीन के कामों भी। अगर्चि मेरे नज़दीक एक मुसलमान का हर काम दीन का काम है, यहाँ तक कि पाखाना पेशाब करना भी दीन का काम है अगर इसे सुन्नत के मुताबिक अंजाम दिया जाए तो सवाब मिलेगा। लेकिन लोगों की बोल चाल का लिहाज़ करते हुए दुन्यावी ज़रूरतों को पूरा करने वाले कामों को हम दुन्या का काम कहे लेते हैं।

दुन्या का हर इन्सान रोजी मुहय्या करने के लिये कोई न कोई पेशा ज़रूर इख्तियार करता है, कोई नौकर है तो कोई मजदूर कोई ताजिर (व्यापारी) है तो कोई कारीगर, जो हुकूमत चला रहा है प्राइम मिनिस्टर हो या, राष्ट्रपति, वज़ीर हो या पुलिस आफिसर सब की तन्ख्वाहें मुकर्रर है सब एक तरह के नौकर हैं, सब के जिम्मे कुछ काम है, सब पर कुछ जिम्मेदारियाँ हैं, बस हर एक को चाहिये कि अपनी ज़िम्मेदारी में कोताही न करे। पी0एम0 या प्रेसीडेन्ट अपने काम में कोताही करेंगे तो मुल्क बरबाद हो जाएगा, वजीर लोग अगर अपने काम में कोताही करेंगे और बड़े–बड़े सनअतकारों (ओद्योगिकों) से भारी–भारी रक़में वसूल करेंगे तो सनअत–कार यह रक़म अपनी पैदावार पर दाम बढ़ा कर अवामुन्नास से वसूल करेंगे और अ़वाम मंहगाई का शिकार होगी। फिर जब मंत्री लोग घूस खाएंगे तो अपने महक़में (विभाग) के आफिसरों की इस्लाह नहीं कर सकते इस प्रकार देश में फसाद (उत्पात) फैलेगा। सच यह है कि जब विजारत और कियादत की सतह पर बिगाड़ आता है तो उस का सुधार सुधारको के हाथ से निकल जाता है उसके हम जवाब देह भी नहीं होते, फिर तो अगर कुदरत सुधार चाहती है तो इन की पकड़ कुदरत ख़ुद करती है, और चूंकि यह लीडरान (नेता) ख़ुद की इस्लाह नहीं चाहते इस लिये ख़ुदाई पकड़ पर उन को तनब्बुह (चेतांवनी) भी नहीं होता लेकिन जब उन की पकड़ होती है तो समाज में कुछ सुधार ज़रूर आता है।

नौकरी पेशे में दो तरह के लोग हैं आफिसर (अधिकारी)और मातहत (कर्मचारी) कुछ मातहत बड़े फ़ख्र से कहते हैं हमारे साहिब तो साढ़े दस बजा कि कुर्सी पर बिराजमान, मजाल है एक मिनट देर हो जाए। अफसर अधिकारी 11 बजे अपने आफिस आते हैं और उसूलों के पाबन्द (नियमवद्ध) कहलाते हैं इन आफिसरों के मातहत भी साढ़े दस से पहले नहीं आते जब कि आफिस टाइम दस बजे है दुन्या के लिहाज़ से देखें और तमाम देर से आने वाले कारकुनान (कर्मचारियों) के एक दिन के औकात जोड़े जाएं तो शायद दर्जनों कर्मचारियों की पूरी नौकरी के वक़्त के बराबर निकले जिस कौम के कारकुनान इतना भारी नुकसान रोजाना पहुँचा रहे है क्या इस से कौम तरक्की कर सकती है? और हमारे दीनी एअतिबार से तो यह सब गुनाहे कबीरा के मुरतकिब (करने वाले) हुए, और चूंकि कौम को नुकसान पहुँचाया इस लिये हक़्कुल–इबाद में मुबतला हुए और ऐसे गुनाह में फंसे कि तौबा से भी छुटकारा मुमकिन नहीं सिवाए इस के कि वह कौम को उस का बदल दें या देर में आए हुए औकात की तन्ख्वाह को खजाने में वापस कर दें। इसी तरह काम न करने और घूस वगैरह लेने का मसअला है कि दुन्यावी लिहाज़ से काबिले सज़ा (दण्डनीय) जुर्म किया दीनी एआबार से जब तक रिश्वत देने वाले को रिश्वत के पैसे वापस न किये जाएं तौबा से कोई फाइदा पहुँचने का कोई इमकान नहीं। जाहिर में तो आखिरत की

सजा उधार है लेकिन आखिरत की सजा की हक़ीक़त मालूम हो जाए तो नीन्द हराम हो जाए।

यहाँ नौकर पेशा से मुराद सरकारी नौकरी पेशा वाले है, इन की इस्लाह का एक ही तरीका है नौकरी पेशा लोगों में जो लोग उसूलों के पाबन्द हैं वह अपने को कोताहियों से बचाएं, साथियों में बात चीत करते रहें और जब तब मजलिसो (गोष्ठियों) का एहतिमाम करें उस में इस्लाह (सुधार) की बात चीत हो उम्मीद है इस से कुछ सुधार हो। फारसी शाअ़िर का एक शिअ़र है :

तन हमः दाग दाग़ शुद
पंबः कुजा कुजा निहम

शाअ़िर कहता है :

जब पूरा बदन जख्मी है तो जख्म का फाया कहाँ कहाँ रखूं?

हमारे मुआशरे का यही हाल है। हर सरकारी मुलाज़िम अपने वक़्त पर आफिस नहीं पहुँचता सहीह काम नहीं करता रिश्वत (घूस) की तलाश में रहता है, प्राइवेट नौकर वक़्त पर इस लिये आता है कि देर हाजिरी पर मालिक बरतरफ कर देगा पर जहाँ मालिकान तनख्वाह वग़ैरह में इस्तिहसाल (शोषण) करते हैं वहीं मुलाज़िम साहिब भी कामचोरी से बाज़ नहीं आते। दूकानदार ज़ियादा नफ़अ़ कमाने के लिये सामाने तिजारत नकली बेचता है सामान में मिलावट करता है यहाँ तक कि खाने पीने के सामान में जहरीली मिलावट से नहीं हिचकिचाता दूध सेन्थेटिक है तो घी चरबी से डालडा मुर्दार चरबी से, सब्ज़ी उगाने वाले कीड़े मार दवा छिडकी हुई जहरीली सब्जी बेचने में कोई संकोच नहीं करते बारहा ऐसा हुआ कि सब्जी बेचने वाले फ्रूट बेचने वाले ने एक किलो झुकता तौला लेकिन घर में तौला गया तो 750 या 800 ग्राम निकला यह सब क्यों? यह रोजी कमाने के लिये नहीं ज़ियादा कमाने के लिये है।

हराम आमदनी से जमा की हुई रक़म आगे और मुआशरती (सामाजिक) बिगाड़ लाती है आप चाहे जितना रोके जहेज़ ज़रूर दिया लिया जाएगा। फिर दौलत के लालची लड़कियों को पंखों में ज़रूर लटकाएगें आग के हवाले करेंगे और खुदकुशी (स्वयं हत्या) साबित कर के बरी हो जाएंगे और उन की दौलत देख कर दूसरे दौलत के लालची अपनी बेटी फिर उन को देंगे।

आखिर यह मुआशरती (सामाजिक) बराइयां कैसे दूर होंगी? यह किसी से ठीक होने वाली नहीं, यह जेल और जुर्माने से डराने से सुधरने वाली नहीं यह तो सिर्फ और सिर्फ खुदाए हक़ीकी का ख़ौफ दिलाने ही से दूर हो सकती है। अगर आप कहें कि मैं फुलाँ को देखता हूँ देखने में बड़े संयमी पर उन में भी इस तरह की खराबिया हैं तो सच यह है कि उन का संयम दिखावे का है जिस के अन्दर वाकई खुदा का ख़ौफ होगा उस से गफलत में तो पाप हो सकता है लेकिन सचेत करते ही वह सावधान हो जाएगा।

हमारी ज़िम्मेदारी

क्षमा चाहता हूँ हमारी से तात्पर्य (मुराद) यह है कि जो लोग अपने को संयमी समझते हैं वह जिस लाइन में भी हों अपना आदर्श (नमूना) पेश करें और संयमी लोग एक दूसरे से जुड़े रहें और जब तब गोष्ठियाँ कर के मुआशरे में खुदा का यकीन और उस का ख़ौफ उस का लिहाज़ यानी तकवा पैदा करने की कोशिश करें यही हमारा फर्ज़ है यही हमारी ज़िम्मेदारी है रास्ते पर लाना खुदा ही के इख्तियार में है।

❑❑

जगनायक

पत्थर से अल्लाह के नबी के नाम से खिताब करने की आवाजें, भी आने लगीं जिनको सुनकर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तअज्जुब से मुतवज्जेह हो जाया करते लेकिन कोई सामने नज़र न आता[2] चुनाँचि चालीस साल की उम्र को पहुँचने पर, जो कि जिसमानी और अख़लाक़ी दोनों लिहाज से मुकम्मल है, आप को नुबूवत का मुकाम अता (प्रदान) हुवा।

❑❑

किस्त : 18

जानायक

हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अनुवाद मु० गुफरान नदवी

कअ़बे की तअमीर (निर्माण)

आप अपने दीनी जज़्बे (भावना) के तहत यूं तो बैतुल्लाह शरीफ़ में इबादत की ग़रज़ से जाया करते थे, और बैतुल्लाह शरीफ़ तअमीर (निर्माण) करने वाले अपने महान पूर्वजों हज़रत इब्राहीम अ़लैहि–स्सलाम और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम से मनकूल तरीके (चलित नियम) को जिस कदर जान सके थे उस तरीके से इबादत करते थे, बुतों की इबादत की जो रस्म (रीति) मिलती थी उस को उनका जेहन कुबूल नहीं करता था लिहाज़ा उनसे अलग रहते हुवे अपने अन्दाज़ से अपने रब की इबादत कर लेते थे, इसी बीच कअ़बा की मरम्मत की ज़रूरत महसूस की गई, उसकी छत नहीं थी दीवार भी सिर्फ़ मर्द बराबर थी और मक्का चूंकि गहराई में है इस लिये सैलाब आने पर सब ख़राब हो जाता था, लिहाजा कुरैश को फिक्र हुई कि उसको ठीक करें, इसी बीच उनको यह ख़बर मिली कि जद्दा में एक जहाज टूटकर बेकार हो गया है, कुरैश के एक सरदार ने वहाँ जाकर कुरैश की तरफ से उसकी लकड़ी के तख़्ते हासिल किये और उनके ज़रिये कअबा का नव–निर्माण किया, चुंकि यह मुक़द्दस इबादत गाह का काम था इस लिये उसमें कुरैश के सब ख़ानदानों के नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) शरीक हुवे, आप अपने काँधे पर पत्थर रख कर लाते और जगह तक पहुँचाते थे जिससे आप के काँधे छिल भी गए, फिर जब हज्र असवद को उसकी ख़ास जगह रखने का समय आया तो कुरैश में झगड़ा हो गया कि हर एक उसको रखने की बरकत हासिल करना चाहता था, करीब था कि उस पर आपस में लड़ाई की नौबत आ जाए।

आख़िर में फ़ैसला यह हुवा कि अगले दिन सुबह सवेरे जो बैतुल्लाह शरीफ़ में सबसे पहले पहुँचे उससे इस सिसिले में फ़ैसला कराया जाए और वह सबको कुबूल हो, अगली सुबह यह खुसूसियत (विशेषता) हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हासिल हुई, आप सबसे पहले वहाँ पहुँचे थे, आप को देखकर सब खुश हुवे और कहा कि यह तो "अस्सा–दिकुल अमीन" हैं (सच्चे अमानतदार) यह बहुत ही मुनासिब (उचित) हैं, चुनाँचि आप के ज़रिये फ़ैसला लिया गया आपने यह फ़ैसला दिया कि "हज्र असवद" एक चादर में रखकर सब मिलकर उठाएं, हर एक अपनी तरफ का किनारा पकड़े, चुनाँचि सबने चारो तरफ़ से चादर पकड़कर उठाया और जब उसकी निश्चित जगह पर पहुँचा दिया तो आपने सहारा देकर उसकी जगह पर रख दिया।[1]

इस तरह आपने अपने हकीमाना फैसले के ज़रिये कुरैश के लोगों को सन्तुष्ट कर दिया कुरैश के लोगो को इस कशमकश (संघर्ष) से बचा लिया कि "हज्र असवद" की बरकत न मिलने पर आपस में तलवारें चल जातीं, जैसा कि अरबों में इज़्ज़त की ख़ातिर हो जाया करता था, आपके इस अमल से सबकी नज़र में आपकी अहमियत और बढ़ गई, ख़ानदान के सब लोग आपकी सच्चाई और खूबियों की पहले से कदर (आदर) करते थे, इससे और आपका सम्मान बढ़ा और महत्वपूर्ण अवसर पर आप पर अधिक विश्वास करने लगे।

ख़ुदाई इनायत (कृपा) व तरबियत (प्रशिक्षण)

आप में यह उच्च मानव विशेषताएं कुछ तो प्राकृतिक तौर पर और तबीअत की सलामती (शान्ति) और महान साहस से पैदा हुई थीं जिनमें ख़ानदान की सर्वोच्च विशेषताओं का भी प्रभाव था, फिर उनमें तरक़्क़ी और मज़बूती ज़िन्दगी के कठिन हालात से गुज़रने और सहनशीलता के अभ्यास से पैदा हुई थीं जिन से आपको बिल्कुल कम

1. उसुदुल ग़ाबा : 1/17, अलकामिल फ़िततारीख : 2/45, तारीख तबरी : 2/290, सीरत इब्न हिशाम : 1/197

उमर ही के ज़माने से साबिक़ा पड़ने लगा था।

बहरहाल सख़्त हालात और ज़िन्दगी की दुशवारियाँ और बहुत ही करीबी मुहब्बत करने वालों की कमी आप में हिम्मत व अज़ीमत (पक्का इरादा) और किरदार की मज़बूती पैदा करने में मददगार बनी, उच्चतम मानव विशेषताओं को आपने अपनाया और उन बुरी बातों से अपने को अलग रखा जो आम आज़ादाना तबीअत के नई उमरों और नवजवानों में पैदा हो जाती हैं और यह वास्तव में अल्लाह रब्बुल आलमीन की इनायत (कृपा) से या जिसकी तौफ़ीक़ ख़ास (विशेष सामर्थ्य) से आप अच्छे और ख़ूबियों वाले तरीके पर चले, और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को इसी आज़ादाना माहौल से एक सच्चे और आला इन्सानी सिफात व अख़लाक़ के फ़र्द को अपना ऐसा नबी बनाना था जिसको क़ियामत तक दीने हक़ (सत्य दीन) का पैगम्बर और रहबर, होना था, कुर्आन मजीद में रब्बुल–आलमीन ने इसकी तरफ़ इशारा भी किया, यह उस मौक़अः (अवसर) पर किया जब नबी बनाए जाने के बअद अल्लाह तआला की तरफ से आती रहने वाली "वही" (इश्वर वाणी) में एक मौक़अ पर देर हुई और आपको ख़ौफ़ हुवा कि कहीं अल्लाह तआला की नज़रे इनायत आप से हट तो नहीं गई, तो सूरह नाज़िल हुई :

"सूरज की रोशनी की क़सम और रात के अंधेरे की जब छा जाए कि ऐ (मुहम्मद) तुम्हारे परवरदिगार ने न तुमको छोड़ा और न तुमसे नाराज़ हुवा और आख़िरत तुम्हारे लिये पहली (हालत अर्थात् दुनिया) से कहीं बेहतर है और तुम्हे परवरदिगार अनकरीब वह कुछ अता फ़रमाएगा कि तुम खुश हो जाओगे, भला उसने तुम्हें यतीम पाकर जगह नहीं दी? (बेशक दी) और रास्ते से अन जान देखा तो रास्ता दिखाया, और ख़ाली हाथ पाया तो मालदार कर दिया तो तुम भी यतीम पर ज़ियादती न करना और माँगनेवाले को झिड़की न देना और अपने परवरदिगाार की नेमतों का बयान करते रहना" (सूरा अज़–जुहा)

हज़रत अबू बकर की दोस्ती

कुरैश में आपके बराबर वाली उम्र के लोगों में आपको सबसे ज़ियादा लगाव और तअल्लुक हज़रत अबू बकर से हो गया था, वह भी मुहतात (संयमी) और साफ तौर तरीक के इन्सान थे इसकी बिना पर दोनों एक दूसरे की खूबियों को पसन्द करके आपस में बहुत मानूस (परिचित) हो गए थे और करीबी रब्त व तअल्लुक पैदा हो गया था, यह तअल्लुक बअद में मिसाली तअल्लुक बन गया और नबूवत मिलने पर उन्होंने आप पर यकीन और आप की मातहती (अधीनता) को दिल व दिमाग़ की पूरी हम आहँगी (पूर्ण सहमति) के साथ कुबूल कर लिया जो आखिर तक मिसाली अन्दाज़ में जारी रही।[1]

ग़ारे हिरा में एतिकाफ़ के लिये वक़्त गुज़ारना

आप नबूवत मिलने से पहले ही दीनी व अख़लाकी हालात की खराबी को महसूस करके सोचने लगे कि यह सब क्या हो रहा है और इन्सान अपनी इन्सानियत से दूर होता चला जा रहा है, इस एहसास की वजह से आप जब तब शहर की आबादी से दूर निकल जाते और आबादी से अलग थलग एक गार में कुछ वक़्त गुज़ारते, ज़ाहिर है आप में तनहाई और तख़लिये में कुछ वक़्त गुजारने का जज़्बा व तक़ाज़ा अस्ल हक़ीक़त की तलब और उसके सिलसिले में गौर व फ़िक्र के लिये रहा होगा, जो आप के गहरे एहसास का नतीजा रहा होगा, फिर चुंकि परवरदिगारे आलम ने अरब और ग़ैर अरब इन्सानों में बहुत ज़ियादा खराबियों और बुराइयों के पैदा हो जाने पर उनकी नसीहत और सुधार के लिये नबी के भेजने का फ़ैसला फ़रमाया और उसके लिये आप का इन्तिख़ाब फ़रमाया, इस लिये जैसे–जैसे नबूवत मिलने का वक़्त करीब आता गया आप को परद–ए–ग़ैब से उसके इशारे भी मिलने लगे, चुनाँचि नबूवत मिलने से पहले ही पेड़ और

शेष पृष्ठ 6

1. अल–मवाहिबुल लदुननिमह क़स्तलानी : पृष्ठ – 38

2. सीरते नबवीयह– इब्ने इसहाक़ 1/91, सीरते इब्ने हिसाम: 1/234

अन्तिम क़िस्त

ग़ैर इस्लामी अख़्लाक़ (नैतिकता) क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में

- मौ० सै० अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी

अनुवाद - नजमुस्साक़िब अ़ब्बासी नदवी

गर्व और घमण्ड

इन्सान में जब कोई विशेषता या कौशल मौजूद होता है तो प्राकृतिक तौर पर उसके ह्रदय में इसका ख्याल पैदा हो जाता है कि दूसरे जिनमें ये विशेषता नहीं है या कम है को तुच्छ समझने लगता है तो उसको अभिमान कहते हैं।

अधिकतर यही लोग सत्यमार्ग में रूकावट और सामाजिक गिरावट का माध्यम बनते हैं और अंहक़ार में लिप्त होकर अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं। पवित्र क़ुर्आन कहता है "और (क़ियामत के दिन) सभी लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगें, तो जो लोग (दुन्या में) कमजोर थे उस समय उन लोगों से जो बड़े सम्मनित थे कहेंगे कि हम तो तुम्हारें कदम ब कदम चलने वाले थे तो क्या आज तुम अज़ाबेइलाही (इश्वरीय यातना) में से कुछ (थोड़ा सा) अज़ाब हम पर से हटा सकते हो।" (सूरः इब्राहीम) अन्य स्थान पर क़ुर्आन कहता है कि "अल्लाह घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करता" (सूरः नह़ल) दूसरी जगह फरमाया" क्या नर्क (जहन्नम) में घमण्ड करने वालों का ठिकाना नहीं? (सूरः ज़ुम्र) एक जगह अल्लाह इर्शाद फ़रमाता है कि "और लोगों से बेरूखी न कर और ज़मीन में इतरा कर न चल निःसन्देह अल्लाह उसको प्यार नहीं करता जिसको घमण्ड हो, जो अत्यधिक गर्व करने वाला हो।" (सूरः लुक़मान)

इस्लाम ने वंश–नस्ल, रंग–सौन्दर्य, धन–दौलत और शक्ति तथा सहायता की अधिकता पर गर्व, घमण्ड करने के सिलसिले में खुले तौर पर अप्रसन्नता का ऐलान किया है यद्यपि फख़्र व ग़ुरूर करने वाले लोग उन्हीं चीज़ों पर गर्व करते है। किन्तु इस्लाम ने उसका दूसरा माप–दण्ड बना रखा है जिसको क़ुर्आन ने इस प्रकार बयान किया है कि "लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारे लिये जाति और बिरादरियाँ ठहराई ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको अल्लाह के समीप तुममें बड़ा "परहेज़गार" है।" (सूरः हुजरात)

जहाँ तक रूप शृंगार और शरीर की बाहरी साज–सज्जा और पवित्रता का सम्बन्ध है तो रूप सौन्दर्य और सफाई–सुथराई को इस्लाम ने एक काबिले कद्र चीज़ क़रार दिया। अतः एक सुन्दर नवयुवक ने जब आप (सल्ल0) से पूछा कि मुझको ये पसन्द है कि मेरा कपड़ा और मेरा जूता बढ़िया हो तो फरमाया कि ख़ुदा सुन्दरता को अधिक पसन्द करता है" (तिर्मिज़ी)। अलबत्ता जिन सूरतों में सौन्दर्य–सुन्दरता घमण्ड के इजहार का माध्यम बन जाता है इस्लाम ने उससे मना किया है।

इस प्रकार इस्लाम ने उन समस्त स्वरूपों पर प्रतिबंध लगा दिया जिससे दूसरों का दिल दुखे या उनको शर्मिन्दगी उठानी पड़े। अल्लाह फरमाता है कि "मुसलमानों! अपनी ख़ैरात (दान) को एहसास जता कर और माँगने वाले को कष्ट देकर उस व्यक्ति की तरह अकारत मत करो जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करता है और क़ियामत (प्रलय) के दिन पर आस्था नहीं रखता।" (सूरः बकरः)

केवल इज़्ज़त और नाम के लिये ख़र्च करना, हर समय अपनी बड़ाई बयान करना वह बिमारी है जो परस्पर अप्रियता का सामान्य वातावरण बनाते हैं। जो ऐबजोई (दोषान्वेषण) का द्वार खोल देते हैं। इस्लाम ने ऐसे सभी चोर दरवाजे बन्द कर दिये हैं और मुसलमानों को सदैव इसकी शिक्षा दी है कि जो भी काम करें वह व्यक्तिगत स्वार्थ और भौतिक उद्देश्य से उपर उठकर करें और अल्लाह के यहाँ प्रसंशा के अधिकारी बनें। पवित्र क़ुर्आन में है "और रिश्तेदार, ग़रीब और मुसाफिर को उसका ह़क़ पहुँचाते रहो, और दौलत को बेजा मत उड़ाओ क्योंकि दौलत को बेजा उड़ाने वाले शैतानों के भाई होते हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।"

(सूरः बनी इस्राइल)

अन्य स्थान पर समस्त जगत का पालनहार फरमाता है कि "और

अपना हाथ न तो इतना सिकोडो कि (मानो) गर्दन में बंधा है और न उसको बिल्कुल फैला दो (ऐसा करोगे) तो तुम ऐसे बैठे रह जाओगे कि लोग तुम्हारी निन्दा भी करेंगे और तुम निर्धन भी हो जाओगे।" (सूरः बनी इस्राईल) पवित्र कुर्आन बयान करता है कि "और ख़र्च करने लगे तो फुजूल खर्च न करें और न बहुत तंगी करें बल्कि खर्च बीच का करो।" (सूरः अलफुरकान)

रिश्वत व सूदख़ोरी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने घूस और सूद देने वाले और रिश्वत तथा सूद लेने वाले दोनों पर धिक्कार (लानत) फरमाई (अबू दाऊद)। घूस हक़ को अनुचित ढंग से प्राप्त करने और ग़लत तरीक़े से उसमें प्रयोग करने हेतु दिया और लिया जाता है। जिनसे क़ानून व शरीअ़त के बन्धन टूट जाते हैं और पूरे समाज में अफरातफरी का वातावरण बन जाता है जिसमें गंभीर बिमारी पैदा हो जाती है। जिसके कारण सोसाइटी का ढाँचा घुन लगे लकड़ी की तरह ज़मीन पर आ जाता है।

सूद के हराम होने का बयान पवित्र कुर्आन में कई जगह है। सूद मानव समाज का नासूर है। वह ग़रीबों, बेसहारों और ज़रूरतमन्दों के जिस्म का एक–एक कतरा चूस कर उनको एक लाश बेजान कर देता है और सूदी कारोबार करने वाले महाजनों को अत्याचार में अभ्यस्त और सिसकती लाशों से खेल का आदी बना देता है। इसीलिये अल्लाह ने ऐसे व्यक्ति को अल्लाह और रसूल (सन्देष्टा) का बागी तथा शत्रु बताया है पवित्र कुर्आन कहता है कि "ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जो सूद तुम्हारा बचा रह गया है उसको छोड़ दो यदि तुम मोमिन हो, और अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) से युद्ध हेतु सावधान हो जाओ।" (सुरः बकरः) इसी सूरत में सूद की बुराई बयान करते हुए कुर्आन कहता है कि "अल्लाह सूद को मिटाता और सदकः (विशेष इस्लामी दान) को बढ़ाता है और ख़ुदा किसी नाशुक्रे गुनहगार को प्यार नहीं करता।" (सूरः बकरः)

मद्यपान

इस्लाम की दूरबीन निगाहों ने शराब की हानि को उस समय देख और उसके वर्जित होने का ऐलान भी उसी वक़्त कर दिया था तथा मुसलमानों ने उसको बिना चूं–चरा के मन से स्वीकारा भी, और उस समय के बड़े–बड़े शराबियों ने इस्लामी आदेश के आगे सर झुका दिया था जबकि दुन्या उसके नुकसान को अब देख पाई है। पवित्र कुर्आन कहता है कि "ऐ ईमान वालो! शराब, जुवा, चढ़ावे, बुत और पाँसे गन्दे काम हैं, शैतान के हैं, उनसे बचते रहो ताकि तुम कामयाब हो, शैतान तो ये ही चाहता है कि तुम्हारे आपस में शराब और जुवे से दुश्मनी और बैर डाल दे और तुमको अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे, फिर अब तुम रूकते हो।" (सूरः माईदः)

अनुचित चाटुकारिता और चापलूसी"

इस्लाम बेजा ख़ुशामद और चापलूसी को नापसन्द करता है क्योंकि बेजा ख़ुशामद और प्रसंशा से आदमी के अन्दर घमण्ड पैदा हो जाता है और अपने गुण–दोष पर नज़र रखने वाली आँख की रौशनी ख़त्म हो जती है। पवित्र कुर्आन में ऐसे स्वार्थी यहूदियों और चाटुकार कपटियों (मुनाफिकीन) के बारे में कहा गया है कि "जो अपने कारनामे पर इतराते हैं और जो उन्होंने नहीं किया उस पर प्रसंशा किये जाने को पसन्द करते है तो उनको कदापि न समझना कि वह दण्ड से बच जाऐंगे और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है।" (सूरः आले इमरान)

सीमा से अधिक धन–दौलत से प्रेम

इस्लामी शिक्षा हद से ज़ियादा माल की मुहब्बत और आवश्यकता–नुसार ख़र्च न करने की निन्दा से भरी पड़ी है। कुर्आन की आयतों की इतनी बड़ी तादाद इस सम्बन्ध में अवतीर्ण (नाजिल) हुई है कि जिनका शुमार करना मुश्किल है। इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के प्रवचनों में जिस अधिकता से इस बुरी आदत को नापसन्द किया गया है कि जिनको इक्ट्ठा रखने के लिए एक दफ्तर की आवश्यकता है, स्वयं हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) ने आप (सल्ल0) की जिन विशेषताओं को याद दिलाया उससे भी यही ज्ञात होता है। हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) ने आप (सल्ल0) को सम्बोधित करते हुए यूं कहा "ऐ अल्लाह के रसूल!

आप क़रीबियों का हक़ और क़र्ज़दारों का कर्ज अदा करते हैं, निर्धनों को पुंजी देते हैं, मेहमानों को खिलाते हैं और हक़ के मुसीबतजदा की सहायता करते हैं।" (बुख़ारी)

सूरः मुदस्सिर जो नबुव्वत (ईशदौत्य) के प्रारम्भिक काल की सूरतों में से है उसमें दोज़ख़ियों के प्रश्नोत्तर का दृश्य है। जब उनसे पूछा जाऐगा कि तुम नर्क (दोज़ख़) में क्यों डाले गये? तो कहेंगे! हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे और निर्धनों को खाना नहीं खिलाते थे। विरोधियों के साथ मिलकर हम सत्यधर्म (इस्लाम) पर आपत्ति जताते थे, और ये सब इसलिए था कि हम प्रलय (क़ियामत) के दिन पर विश्वास नहीं रखते थे। दोज़ख़ियों के मध्य वार्तालाप को कुर्आन इस अन्दाज़ में बयान करता है कि "तुमको दोज़ख़ (नर्क) में क्या चीज़ ले गई, कहेंगे हम नमाजियों में से न थे और ग़रीबो को खिलाते न थे और बहस करने वालों के साथ होकर हम भी बहस किया करते थे और क़ियामत के दिन को झुठलाते थे।" (सूरः मुदस्सिर) अन्य स्थान पर है कि "जिसने माल इक्ट्ठा किया उसको गुना किया, समझता है कि उसका धन उसको हमेशा रखेगा कदापि नहीं, वह अवश्य ही नर्क (दोज़ख़) में जाएगा।" (सूरः हम्ज़ा)

बुख़्ल (कन्जूसी)

कन्जूस आदमी न दुन्या में खुश रहता है और न उसका परलोक ही संवरता है। दुन्या में सब कुछ होने के बाद भी न अच्छा खाना हाथ आता है, न अच्छा पहनना न मान—सम्मान। प्रत्येक उसके नाम से घृणा करता है और फ़क़ीर उसको बददुआ देता है। यहाँ तक बीवी—बच्चे जिनके के लिये वह सब कुछ करता है वह भी उससे खुश नहीं रहते। स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उससे पनाह माँगा करते थे। आपकी दुआओं में ये दुआ भी थी कि "मेरे रब! मैं बुख़्ल, सुस्ती, बुढ़ापा, क़ब्र के अज़ाब, ज़िन्दगी और मौत की आज़माइश से तेरी पनाह माँगता हूँ। (मुस्लिम)

इसी प्रकार लालच—लोभ से मन को बचाने की बड़ी ताकीद है। त्याग और अपने उपर दूसरो को वरीयता देने की प्रेरणा दी गई है। पवित्र कुर्आन कहता है कि "अपने उपर दूसरो को वरीयता देते हैं यद्यपि स्वयं उनको आवश्यक्ता हो, और जो अपने मन को बचा ले गया वह सफल है" (नसाई)। एक अवसर पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि लालच से बचो क्योंकि तुमसे पहली कौमें इसी लोभ से तबाह हुई, उसी ने उनसे कहा तो उन्होंने रिश्ते के हक़ को काटा, उसी ने उनसे (ईश्वरीय) अवज्ञा के लिये कहा तो उन्होंने किया।" (अबू दाऊद) कई सहाबियों का बयान है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि दो भेड़िये जो बकरियों के झुण्ड में छोड़ दिये जाएं वह उनको इतना बर्बाद नहीं करते जितना धन और वैभव इन्सान के दीन—ईमान को बर्बाद कर देता है। (तिर्मिज़ी)

❑❑

डायबिटीज की होमियोपैथिक...

नैट्रम सल्फ 3X : वर्णन किया जा चुका है।

साइलीशिया 12X : शरीर पर जगह—जगह घाव, किडनी में भी किसी प्रकार का घाव, पेशाब गन्दला पीला। यह अन्य औषधियों की क्रिया भी तेज़ करता है।

बायोकेमिक की इन औषधियों का वर्णन पढ़ने के बाद आप असमंजस में पड़ सकते है कि मरीज़ को इनमें से कौन सी दवा दी जाये? सभी दवाओं के कुछ न कुछ लक्षण मौजूद है। अतः आप 1—1 टिकिया समस्त 9 दवाओं की प्रति ख़ुराक के हिसाब से दीजिये 4—5 दिनों में यदि सुधार नज़र न आये तो दूसरी तीन औषधियों अर्थात् कलकेरिया फ्लोर, केल्केरिया सल्फ और काली सल्फ दीजिए।

बायोकेमिक औषधियों के साथ यदि होमियोपैथिक औषधियाँ भी अदल—बदल कर देते रहेंगे तो और शीघ्र लाभ की आशा की जा सकती है।

एक नुस्ख : जामुन के दस पत्ते, नीम की बीस पत्तियाँ बेल के तीस पत्ते और तुलसी की चालीस पत्तियाँ मिला कर सुखा लें और पीस कर शीशी में भर लें। एक चम्मच चूर्ण सुबह खाली पेट, ठण्डे पानी के साथ, दस दिन तक लें। ये प्रयोग शुरू करने से पहले शुगर की जाँच करा लें और दस दिन प्रयोग करके फिर शुगर की जाँच करा लें।

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु० ज़फर आलम नदवी

प्रश्न : लड़का दूसरे मुल्क में और लड़की किसी और मुल्क में उन का निकाह टेलीफोन, इन्टरनेट वेब साइट या ईमेल से हो सकता है या नहीं?

उत्तर : इस्लामी शरीअत में निकाह के लिये यह ज़रूरी है कि ईजाब व कबूल एक ही मज़लिस में हो इस लिये टेलीफोन, मोबाइल, इन्टरनेट वग़ैरह पर निकाह दुरूस्त न होगा। अलबत्ता अगर आलात से वकील बनाया जाए तो यह सहीह होगा फिर वह वकील दो गवाहों के सामने दूसरे फरीक से ईजाब के कलिमात कहे और दूसरा फरीक कबूल करे तो निकाह हो जाएगा।

(फतावये हिन्दीया 1:269)

प्रश्न : किसी शख़्स का इन्तिकाल हुआ बीवी का महर बाकी है अगर बीवी मुआफ कर दे तो क्या महर मुआफ हो जाएगा? जब कि घर के लोग बीवी पर दबाव डाल रहे है कि वह महर मुआफ कर दे।

उत्तर : अगर बीवी किसी के दबाव के बिना महर मुआफ कर दे तो मुआफ हो जाएगा लेकिन दबाव से मुआफ किया तो मुआफ न होगा ऐसी सूरत में मय्यित के तरके से बीवी का महर अदा किया जाए फिर तरका तक्सीम हो।

प्रश्न : किसी का निकाह बहुत पहले हुआ उस वक़्त महर चन्द सौ था अब अगर शौहर महर अदा करना चाहे तो वही चन्द सौ अदा करे या उस वक़्त के रूपये की कीमत का अन्दाज़ा करके रक़म बढ़ा कर अदा करे?

उत्तर : इस मसअले में उलमा की दो राएं है एक का कहना है कि जो रक़म महर में मुक़र्रर हुई थी उतनी ही रक़म दे देने से महर अदा हो जाएगा मगर उलमा का एक ग्रुप कहता है कि निकाह के वक़्त महर से जितना सोना मिल सकता था जब भी महर अदा करे उतने सोने की कीमत अदा करें। एहतियात इसी में है कि इसी (दूसरी) राय पर अमल हो।

प्रश्न : मौजूदा दौर में शादी जैसे प्रोग्रामो में नाजाइज चीजें कसरत से पाई जाती हैं जैसे वीडियो ग्राफी नाच गाने वग़ैरह, क्या इन में शिरकत दुरूस्त है? जब कि शिरकत न करने पर रिश्तेदारों में बदगुमानियाँ पाई जाती हैं, रिश्ते टूटते है ऐसी सूरत में शरीअत का क्या हुक्म है?

उत्तर : जिन शादियों में गैर शरई उमूर पाए जाएं उन से दूर रहना चाहिये, अल्लामा इब्नि आबिदीन शामी ने लिखा है कि जब तक यकीन से मालूम न हो जाए कि दावत में बिदअत व शिर्क न होगा उस वक़्त तक शिरकत नहीं करना चाहिये।

(रद्दुलमुहतार 9:105)

प्रश्न : जहेज़ की शरई हैसियत क्या है?

उत्तर : अगर लड़के या उस के सरपरस्तो की तरफ से लड़की वालों से ज़हेज़ या रक़म का मुतालबा हो तो यह बिल्कुल नाजाइज़ है और रिश्वत है और अगर मुतालबा न हो रवाजन व रसमन जहेज़ या रक़म दी जाए तो यह भी नाजाइज़ है गलत रस्म व रवाज को मिटाना ज़रूरी है न कि उसका तआवुन करना लेकिन अगर लड़के वालों के रोकने और मना करने के बावजूद जहेज़ या रक़म दी जाए तो चूंकि यह रस्मों का तआवुन इस लिये यह भी जाइज नहीं।

प्रश्न : शादी में लेन देन और मुतालबे की शरअी हैसियत क्या है?

उत्तर : इस्लामी शरीअत में किसी का माल उस की इजाज़त के बिना लेना या नाहक़ मुतालबा करना जाइज़ नहीं है अल्लाह तआला ने फरमाया "अपने माल बातिल तरीके से मत खाओ" (अल बकरहः 188) किसी को मजबूर कर के माल हासिल कर के खाना भी बातिल तरीके से माल खाना है शादी के मौके पर सामान वग़ैरह का मुतालबा करना भी बातिल माल खाने की तरह है। फुक़हा ने इस तरीके से माल लेने को रिश्वत करार दिया है शादी में आज कल जो लेन देन का चलन

है वह शरीअ़त में जाइज़ नहीं है।
(रद्दुलमुहतार 9:607)

प्रश्न : जो लोग मुतालबा कर के लड़की वालों से सामाने जहेज़ गाड़ी और नक्द रक़म लेते हैं उन के वलीमे में शिरकत करना कैसा है?

उत्तर : शादी में मुतालबा कर के जो सामाने जहेज़ गाड़ी वग़ैरह और नक़्द रक़म ली जाती है वह ह़राम माल है ऐसा शख़्स ज़ालिम और ग़ासिब है इस लिये उस के वलीमे में शिरकत करना मक्रूहे तह़रीमी है उस से बचना ज़रूरी है क़ुर्आन मजीद में है अनुवाद : "याद आ जाने के बाद ऐसे ज़ालिमों के पास मत बैठो (6:68) जिस वलीमे में मुनकरात हों उस में शिरकत दुरूस्त नहीं बल्कि वहाँ से निकल जाना ज़रूरी है।
(रद्दुलमुह़तार 7:501)

प्रश्न : आज कल शादियों में बाजों का इस्तिअ़माल आ़म हो गया है क्या ऐसी शादियों में शिरकत जाइज़ है?

उत्तर : जिन शादियों में नाजाइज़ गाना और बाजा वग़ैरह हो उस में शरीक होना दुरूस्त नहीं बल्कि अगर वहाँ पहुँच गये हों तब भी वहाँ से निकल आना ज़रूरी है शामी ने तो लिखा है कि अगर दस्तरख़्वान पर हो और बाजा वग़ैरह हो तो उठ कर निकल आए।
(रद्दुलमुहतार 7:501)

प्रश्न : एक साहिब शादी के बाद वलीमा किये बिना सऊदिया चले गये दो साल बाद आए है और अब वलीमा करना चाहते हैं इसका क्या हुक्म हैं?

उत्तर : वलीमा मिया बीवी के मिलाप के बाद दूसरे या तीसरे दिन मसनून है दो साल के बाद जो दावत होगी वह आम दावत होगी मसनून वलीमा न होगा।

❑❑

नमाज़

नज़र रायबरेलवी

एलान कर रही है
ये अ़ज़मत नमाज़ की
मोमिन वह है करे जो
• ह़िफ़ाज़त नमाज़ की
रब ने बुला के अर्श पे
बख़्शी हुजूर को
ये शानो मरतबा है
ये अ़ज़मत नमाज़ की
ख़ल्लाके दो जहां की
अदालत लगेगी जब
काम आएगी वहां पे
शहादत नमाज़ की
दुन्या में भी जो देखना
चाहे वो देख ले
पाबन्द हो के हर तरह
बरकत नमाज़ की
पैवस्ता तीर पांव से
निकले खबर न हो
हज़रत अली से पूछिये
लज़्ज़त नमाज़ की
मैदाने जंग में भी
न छोड़ी गई नमाज़
पूछे कोई हुसैन से
कीमत नमाज़ की
मकबूले बारगाहे ख़ुदा
जानिये नज़र
होती है जिन दिलो पे
हुकूमत नमाज़ की

बेझरे की बेझरी

बेझरा यानी मिलौना जानो
खास किस्म उस की पहचानो

गेहूं जौ हों किलो–किलो भर
छोटी मटर हो आध किलो भर

चना हो देसी मुटरी वाला
लो उस को तुम सवा किलो भर

पाँचों दाने एक करो तुम
चक्की को फिर पेश करो तुम

मोटा आटा उस से पीसो
झन्ने में फिर उसको छानो

झन्ना यानी मोटी छलनी
मोटा आटा दे जो छलनी

बेझरे का लो आटा है ये
अन्दर हफ़्ता खाना है ये

इस आटे की मोटी रोटी
इसी को कहते बेझरी रोटी

यह रोटी जब खाना चाहो
लहसुन मिर्चा नमक पिसाओ

सिरका फिर तुम उस में डालो
प्याज कतर लो वह भी डालो

बेझरे की बेझरी पकवाओ
गर्म–गर्म चटनी से खाओ

पानी पी कर प्यास बुझाओ
शुक्रे ख़ुदा में जुबाँ हिलाओ

इस मौसिम का तुहफ़ा है ये
हम जैसों का खासा है ये

किस्त 6.

मुस्लिम समाज

समाज सुधार

दीनी मदारिस - महत्व, उपयोगिता और ज़रूरत

- हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

इस्लाम विरोधी ताक़तों ने इस्लाम को कमज़ोर और बेअसर बनाने के लिये इस्लाम की शक्ति के दो पहलुओं को अपनी हानिकारी प्रयासों का ज़्यादा निशाना बनाया है एक इस्लामी शरीअ़त के वे नियम जो इस्लामी रहन–सहन को विशुद्ध और पाकबाज़ रखने से सम्बन्धित हैं, जिन में मर्द व औरत दोनों के मामले आते हैं, और मानव–समाज में दुरूस्तगी कायम रखने के लिये अल्लाह की तरफ से जो नियमावली मुक़र्रर है और जो सामूहिक़ मामलों व सम्बन्धों से सम्बन्ध रखते हैं और ज्योरिस्प्रडेन्स के तहत आते हैं, उन पर ऐतराज़ का तरीका अपनाया जाता है।

दूसरा पहलू कुर्आन से मुसलमानों का जो तअ़ल्लुक़ है कि इस के ज़रियः मुसलमान के दिल को रूहानियत (आध्यात्म) और अपने परवरदिगार के साथ बन्दगी के तअल्लुक को मदद मिलती है, बल्कि वह एक ऐसा स्रोत व केन्द्र है कि इस से मुसलमान जितना बन्धा रहता है उतना ही उस में धार्मिक भावना और सद्‌आचरण की कैफ़ियत पैदा होती है। इस पर हमले किये जा रहे हैं। अतः ज़रूरत इस बात की है कि धार्मिक शिक्षा की सेवा करने वाले लोग इन दोनों पहलुओं के सिलसिले में ज़रूरी सलाहियत (योग्यता) पैदा करें, और इस तरफ से आने वाले खतरों के मुकाबले के लिये अपने ज्ञानार्जन करने वालों को तैयार करें।

पश्चिम की सामाजिक मानसिकता इस्लाम को अपना असल दुश्मन समझती थी, और अब भी यही समझ रही है। बल्कि पश्चिमी देशों के सत्ताधारी गलियारे ने यहाँ तक कह दिया है कि क्म्यूनिस्ट रूस के बाद हमारा असल दुश्मन इस्लाम है। अतएवं उन को बराबर इस बात की चिन्ता बनी हुई है कि इस्लाम की धार्मिक विशेषता की हिफाज़त के यह स्कूल जो मुसलमानों में इस्लामी विशेषताओं की सुरक्षा का काम कर रहे हैं, किसी तरह ख़त्म कर दिये जायें चाहे ताकत और सियासी डिप्लोमैसी के जरियः या कुछ फ़र्ज़ी इल्ज़ाम लगा कर इन की हैसियत को बेवकअ़त (निरर्थक) बल्कि खतरनाक करार देकर। इसके लिये अनेक शब्दावलियाँ प्रयोग करने का तरीका अपनाया गया। और लगभग हर मुल्क में यह कोशिश की जा रही है कि धार्मिक सुरक्षा की यह संस्थायें समाप्त हो जायें। और दुनिया में मनमानी ज़िन्दगी की फिजा आम हो जाये और व्यवहार में दुनिया में यह देखा भी गया कि जिन मुल्कों में दीनी इदारे ख़त्म कर दिये गये वहाँ इस्लामियत भी ख़त्म हो गयी।

तुर्किस्तान में मैंने खुद देखा कि जहाँ पूर्व में उल्मा की तादाद और काम ऐसा जबरदस्त रह चुका है कि दुनिया के विभिन्न भागों में उन की लिखी हुई किताबें इस समय भी पढ़ाई जा रही हैं और उन से इस्लामी तालीमात और अहक़ाम की सुरक्षा का काम लिया जा रहा है। रूसी अहद (काल) मुसलमानों के दीनी मदरसों के खत्म कर देने के बाद सिर्फ दो नस्लें गुजरने के बाद यह हाल हो गया था कि बहुत से लोग नमाज़ रोजा तक का मतलब समझने से महरूम हो गये थे, यहाँ तक कि इस्लाम में इबादत के लफ्ज़ का जो मतलब है उस तक से नावाकिफ़ हो गए थे, इस्लामी अक़ीदा से और उसके अहकाम से वाक़िफ होना तो बहुत दूर की बात है, वह मामूली दीनी बातों से भी वाक़फियत न रख सके थे, अलावा उन कुछ सीमित इलाकों के जहाँ खुफ़िया दीनी तालीम दी जाती रही, इन के अलावा बकिया आम इलाकों में दीन से बिल्कुल नावाकफियत हो गयी थीं, यद्यपि वह इसके बावजूद अपने

को मुसलमान कहते और समझते रहे। इस्लाम से उनका रिश्ता सिर्फ यही रह गया था कि वह अपने को मुसलमान और मुसलमान नस्ल का जानते थे। उन के यहाँ इस्लाम की बाते बताने वाले नहीं रहे थे। अब वहाँ आज़ादी मिलने पर फ़र्क़ शुरू हुआ है।

आदमी की फितरत है कि जो सुनता है और देखता है उसी को अपनाता है और जिस बात से नावाक़िफ़ है उस से वह वंचित रहता है। ज़रूरत है कि इन मदरसों के महत्व को समझा जाये और इन को बढ़ाया जाये और फैलाया जाये। कम से कम इस के इब्तदायी (प्राथमिक) मरहले को जितना आम किया जा सके आम किया जाये। और जहाँ--जहाँ दीन से नावाक़- फियत के हालात हैं वहाँ की फ़िक्र और ज़्यादा की जायें, न कि इन को बेज़रूरत बता कर इन के मामले में विरोधात्मक रवैयः अपनाया जाये। हमारी धार्मिक शिक्षा की यह संस्थायें हमारी मिल्लत के बच्चों को इस्लाम की उन शिक्षाओं से अवगत कराती हैं जिन से इस उम्मत के मुसलमान होने की सिफत बरकरार है। क्यों कि इस्लामी तालीमात के लेहाज़ से इस दुनिया के साथ तौहीद व रिसालत व आख़िरत का अक़ीदा क़तई और लाज़िमी है, इस पर यक़ीन और इस के मुताबिक अमल के बिना दीन इस्लाम का बक़ा नहीं।

आधुनिक शिक्षा के लादीनी साँचे से गुजरे हुए कुछ बुद्धिजीवी हमारे इन दीनी मदरसों को मिल्लत के लिये गैरज़रूरी समझते हैं। उन के नज़दीक दीनी तालीम का ऐसा महत्व नहीं कि इस के लिये अलग से ध्यान दिया जाये क्योंकि दीन उन के नजदीक सिर्फ चन्द मामूली बातों तक सीमित है। और यह बातें बिना ख़ास इन्तेजाम के स्वतः मालूम हो सकती हैं। उनका यह विचार ओछा विचार है। मुसलमानों के जीवन में दीन अपना पूरा महत्व रखता है और जीवन में पूरी व्यापकता भी रखता है। इस बात को वह लोग नहीं समझते जिनके ज़ेहन की बनावट (संरचना) विशुद्ध पाश्चात् शिक्षा व्यवस्था में हुई है। वह पश्चिम के लादीनी (नास्तिक) दृष्टिकोण से ही सोचते हैं और कहते हैं कि दीन की शिक्षा के लिये बाकायदा इन्तेजाम की कोई ज़रूरत नहीं। हालाँकि अगर वह दीन की ज़िन्दगी में विस्तृत स्थान न देते हुए इस को मुसलमान की ज़िन्दगी का सिर्फ एक पहलू ही मान लें तो भी यह मानना पड़ेगा कि जिस तरह इन्सानी ज़िन्दगी को मेडिकल कालेजों की ज़रूरत है ताकि लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता पूरी होती रहे, और जिस तरह इन्जीनियरिंग कालेजों की ज़रूरत है कि इन से जीवन के इन पहलुओं की ज़रूरत पूरी करने वाले लोग पैदा हों और इन की ज़रूरत पूरी हो सके, और जिस तरह लॉ कालेजों की ज़रूरत है कि सत्ताधारी हुकूमत के क़ानून की वाक़फ़ियत रखने वाले विशेषज्ञ पैदा हों, और क़ानूनी सुरक्षा की व्यवस्था हो, इसी तरह मज़हब को मुसलमानों की ज़िन्दगी का अगर एक पहलू तस्लीम कर लिया जाये तो भी उन को हमारे इन दीनी मदरसों के महत्व को मानना पड़ेगा, कि इस ज़रूरत के इन्तेजाम के लिये इन मदरसों की ज़रूरत है। हालाँकि इस्लाम में मजहब ज़िन्दगी का सिर्फ एक पहलू ही नहीं बल्कि ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं पर अहक़ाम व तालीमात रखता है जिनको जाने और उन पर अलम किये बिना हम जीवन को अपने परवरदिगार के हुक्म के मुताबिक नहीं बना सकते।

आज से सत्तर अस्सी साल पहले डाक्टर मुहम्मद इक़बाल जैसे पश्चिम और पूरब से वाकिफ और दोनों की जीवन--व्यवस्थाओं की विशेषताओं का अनुभव रखने वाले व्यक्ति ने भी दीनी मदरसों का महत्व बताया है, और साफ तथा प्रभावी ढंग से इन की क़द्र व कीमत ज़ाहिर की है। वह कहते हैं :

"इन मकतबों और मदरसों को इसी हालत में रहने दो, ग़रीब मुसलामनों के बच्चों को इन्हीं मदरसों में पढ़ने दो। क्योंकि अगर यह मुल्ला और दरवेश न रहें तो जानते हो क्या होगा? जब जो कुछ होगा उसे मैं अपनी ऑखों से देख आया हूँ। अगर हिन्दुस्तान के

मुसलमान इन मदरसों के असर से महरूम हो गये तो बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह स्पेन में मुसलमानों की आठ सौ वर्ष हुकूमत के बावजूद आज गरनाता और कुरतुबः (कारटोबो) के खंडहर और अल हमराअ और बाबुल ख़वातीन के निशानात के सिवा इस्लाम के मानने वालों और इस्लामी तहजीब के असरात का कोई नक्श नहीं मिलता, हिन्दुस्तान में भी आगरा के ताज महल और दिल्ली के लाल क़िला के सिवा मुसलमानों के आठ सौ सालः हुकूमत और उन की तहजीब का कोई निशान नहीं मिलेगा।"

मुसलमानों के लिये यह बात कतई काबिले कबूल नहीं हो सकती कि उन की ज़िन्दगी मजहब से बेतअल्लुक कर दी जाये जिस तरह योरोप और अमेरीका में और इन के मानने वालों में कर दिया गया है। और इन्सान को सिर्फ भौतिकवादी मसलहत के अन्दर सीमित कर दिया जाये। इस का अनुभव स्वयं पश्चिम में नैतिक व मानवीय अनुभूतियों व भावनाओं में स्वार्थ और जीवन के हर मामले में विशुद्ध भौतिकवादी दृष्टिकोण फैल जाने में देखा जा सकता है जिस के दुष्परिणाम ख़ुद वहाँ भी महसूस किये जाने लगे हैं। और सारी दुनिया भी इन के असर को दिख रही है और परेशान है।

हमारी मजहबी तालीम के यह इदारे जिन को मुमताज़ उल्मा–ए–दीन और दीन व मिल्लत की सही फ़िक्र रखने वाले मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने कायम किया, और चला रहे हैं, और इन से इस्लाम मजहब की हिफाजत अंजाम पा रही है, इन को मुसलमानों के अहितैषियों की तरफ से बार–बार चैलेंज किया जा रहा है। अगर हम इस चैलेंज के खतरे को नहीं समझ सकेंगे तो हम बहैसियत मुसलमान के खत्म हो जायेंगे। और पश्चिमी कौमों की सफों में एक जैली कौम बन कर रह जायेंगे, इस लिये ज़रूरत है कि हमारी इन दरसगाहों को जो मुसलमानों की जिन्दगियों में दीन से वाक़फ़ियत पैदा करने और इस से अपने लगाव को कायम रखने के लिये पावर हाउस की हैसियत से काम कर रही हैं, अहमियत (महत्व) की नज़र से देखा जाये।

मुसलमानों के लिये मौजूदा दौर विभिन्न प्रकार के महत्व और तक़ाज़ों का दौर बन गया है। इस समय विश्व स्तर पर इस उम्मते इस्लामिया को बेअसर बल्कि बेनाम व निशान कर देने की कोशिश हो रही है। जगह–जगह साज़िशें चल रही हैं, कहीं इल्मी व फ़िक्री मैदान में, कहीं कलचर के मैदान में, कहीं सियासी व समाजी मैदान में, ऐसे–एसे फ़ितने खड़े किये जा रहे हैं कि अगर इन के मुकाबले के लिये मुमताज़ अहले इल्म व आला सलाहियत के लोग तैयार करने का काम न किया गया तो इस उम्मत के वजूद को खतरा पेश आ सकता है। (जारी....)

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

रात की तारीकी में इसकदर दूर गए कि नज़रों से ओझल हो गए, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए मैंने पानी डाला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चेहरा मुबारक धोया और आप ऊनी जुब्बा पहने थे। उस में से हाथ न निकाल सके तो उस जुब्बा के नीचे से हाथ निकाल कर धोए, फिर सर का मसह किया, मैंने चाहा कि झुक कर आप के मोजे उतारूं, आप ने फरमाया उनको छोड़ो, मैंने उनको पाकी की हालत में पहना है और उन पर मसह फरमाया है।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

तकब्बुर का लिबास

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख़्स तकब्बुर से अपने कपड़ों को खींचेगा तो कयामत के दिन अल्लाह तआला उसकी तरफ नज़र न करेंगे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) ने अर्ज किया या रसूल अल्लाह मेरी लुन्गी ढीली हो कर लटक जाती है मगर मैं उस का ख्याल रखता हूँ, आप ने फरमाया तुम उनमें नहीं जो तकब्बुर से ऐसा करते हैं। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो पाजामह टखनों से नीचे हो वह आग में है (यानी दोज़ख की आग में)। (बुख़ारी)

❑❑

क़िस्त 25

हम कैसे पढ़ायें?

अध्याय सात

अध्यापक बन्धुओं के लिए

- डॉ० सलामतुल्लाह

अनुवादः एम0 हसन अंसारी

4. समस्या की विधि

इस विधि में टीचर अपनी तरफ से बच्चों को मालूमात देने के बजाय, विषय को एक समस्या के रूप में प्रस्तुत कर देता है। बच्चे इस समस्या को हल करने की कोशिश करते हैं। टीचर उन की मदद और मार्गदर्शन करता है।

इस विधि की जाँच

इस विधि से बच्चों में सोच–विचार की आदत पड़ती है। डेवी जो आधुनिक युग का एक विख्यात विचारक और शिक्षाविद् है कहता है कि ज्ञानमयी सोच विचार और सामान्य सोच विचार में जिसे हम प्रतिदिन जीवन की छोटी बड़ी समस्या को हल करने में बरतते हैं कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं है। फ़र्क सिर्फ इतना है कि ज्ञानमयी समस्याओं में सोचने की प्रक्रिया पेचीदा है, और आम समस्याओं में सादा।

विचार मन्थन के हिस्से

हर सोचने की प्रक्रिया में निम्न हिस्से होते हैं :

(i) ज़रूरत का एहसास होना। हम किसी समस्या पर उस समय तक तैयार नहीं होते जब तक उसकी ज़रूरत और उसका महत्व हमें महसूस नहीं होता। अतः इस विधि को यदि हमें काम में लाना है तो समस्या के महत्व का एहसास बच्चों को होना चाहिये। अर्थात् उन्हें समस्या से इतनी दिलचस्पी हो जाना चाहिये कि वे इस के बारे में छान बीन करने को मजबूर हो जायें।

(ii) समस्या की विवेचना और उसकी सीमाओं का निर्धारण– समस्या की ज़रूरत का एहसास होने के बाद हम अपने मन में उस के प्रकार और विस्तार की रूपरेखा बनाने की कोशिश करते हैं। जब तक समस्या हमारे सामने स्पष्ट स्वरूप में न आ जाये, उस समय तक हमें उसका हल सोचने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। क्यों कि ऐसा न करने में आशंका है कि हमारी सारी मेहनत अकारत जाये। अतः बच्चों के शिक्षण में यह बात हमेशा याद रखना चाहिये कि वह समस्या को साफ और सुस्पष्ट तौर पर समझ लें। इससे पहले कि वह इसे हल करने का प्रयास करें।

(iii) हल के सम्भावित हलों का मन में आना–समस्या को भली प्रकार समझ लेने के बाद उस के हल की कई सूरतें हमारे मन में आती हैं। पहली नज़र में हमें यह मालूम होता है कि इसके कई हल हो सकते हैं। हम सोचते है कि शायद इस समस्या का हल फलाँ हो, फिर यह विचार आता है कि नहीं, अमुक हल इस से बेहतर है। इस विधि को शिक्षण में प्रयोग करते समय भी यही होता है। बच्चे अपनी अपनी समझ के अनुसार प्रस्तुत समस्या के विभिन्न हल पेश करते हैं।

(iv) इन सूरतों के औचित्य पर मनन करना–अन्ततः हम इन सूरतों पर एक–एक कर के मनन करते हैं। तर्क के जरियः हम किसी प्रस्तावित हल के ठीक या न ठीक होने के बारे में फ़ैसला करते हैं। अतः बच्चे जब अपना–अपना हल तजवीज़ कर चुके तो उन में से प्रत्येक के औचित्य पर विचारों का आदान प्रदान (बहस) होना चाहिये। टीचर उचित प्रश्नों के द्वारा यह काम अंजाम दे। बच्चे स्वयं दलीलों के जरियः गलत हलों को रद्द करें। इस प्रकार अन्ततः वह सही हल मालूम कर लेंगे।

एक मिसाल

यह स्पष्ट करने के लिये कि किसी पाठ के पढ़ाने में समस्या की विधि का किस प्रकार प्रयोग होता है, हम एक मिसाल पेश करते हैं।

एक दिन जब बच्चे अपनी क्यारियों में काम कर रहे थे तो उन में से एक लड़का जमील टीचर के

पास आया और कहने लगा, "मास्टर साहब! मेरे साथियों की क्यारियों में पौधे खूब बढ़ रहे हैं और वह हरे भरे दिखाई देते हैं। लेकिन मेरी क्यारी में पौधे कुछ मुर्झाये हुए से हैं, और उन की पत्तियाँ पीली पड़ रही हैं। न जाने मेरी क्यारी को कौन सा रोग लग गया है।

जमील के सामने एक बड़ी समस्या थी और वह इसे हल करने की ज़रूरत महसूस कर रहा था। उस के दूसरे साथियों को जब यह बात मालूम हुई, तो उन के दिलों में भी इस समस्या कौ हल करने की ज़रूरत का एहसास पैदा हो गया। यह पाठ का पहला सोपान है।

टीचर ने बच्चों को इसका सही हल निकालने में किस तरह मदद की इसे हम एक संवाद के रूप में नीचे दर्ज करते हैं :

टीचर : (पूरी क्लास को सम्बोधित कर के) ध्यान से देखो कि इन पौधों की क्या हालत है?

जमील : मास्टर साहब यह पौधे अभी सूखे तो नहीं हैं। लेकिन इन की पत्तियाँ कुछ पीली सी पड़ रही हैं और मुर्झाई हुई मालूम होती हैं। इन में वह हरापन नहीं है जो दूसरी क्यारियों के पौधों में है।

टीचर : हाँ ठीक है। तो मालूम यह करना है कि यह पौधे पीले क्यों पड़ रहे हैं?

(यह उस पाठ का दूसरा सोपान है, अर्थात् यहाँ असल समस्या को स्पष्ट करने के बाद इस का सीमाँकन कर दिया गया)

हरी : जमील अपनी क्यारी में समय से पानी न देते होंगे। इसी वजह से इन के पौधे कमजोर हैं और इन की पत्तियाँ पीली पड़ रही हैं।

जमील : नहीं भाई, जब तुम अपनी क्यारी सींचते हो तो मैं भी सींचता हूँ, देखो न, मेरी क्यारी में मिट्टी अब भी गीली है।

टीचर : अच्छा यह बात तो मालूम हो गयी कि जमील अपनी क्यारी में औरों की तरह ज़रूरत के मुताबिक पानी देता है। फिर इस की क्या वजह हो सकती है?

जगदीश : शायद जमील ने अपनी क्यारी में पर्याप्त खाद नहीं डाली है।

जमील : नहीं जनाब, मैं ने तो अपनी क्यारी में काफी खाद डाली थी, और उसे मिट्टी में अच्छी तरह मिला भी दिया था।

टीचर : जब इस की क्यारी में पौधों के उगने के लिये काफी खाद मौजूद है और पानी भी आवश्यकतानुसार मिलता है तो फिर क्या कारण है कि पौधे हरे भरे नहीं हैं?

(कोई जवाब नहीं देता)

टीचर : जमील, तुमने अपनी क्यारी यहाँ क्यों बनाई? (क्यारी के एक तरफ दीवार है और दूसरी तरफ नीम का पेड़)

जमील : मैंने क्यारी बनाते समय यह सोचा था कि इस जगह सूरज की तेज धूप कभी नहीं पड़ेगी। सुबह के समय यहाँ दीवार की छाया रहती है और शाम के समय नीम की छाया इसलिये हमारे पौधे सूखेंगे नहीं।

टीचर : यही तो तुम्हारी भूल है कि तुमने अपनी क्यारी छाया में बनाई है। जहाँ सूरज की रौशनी काफी न पहुँचे और हमेशा छाया रहे, वहाँ पौधे अच्छी तरह उग नहीं सकते, उन की पत्तियाँ बहुत जल्द पीली पड़ जाती हैं। और मुर्झा जाती हैं

जमील : क्यों? हम तो अब तक यह समझते थे कि सूरज की धूप से पौधे सूख जाते हैं।

टीचर : अगर पौधों को पानी काफी मिलता रहे तो वह सूरज की धूप से कभी नहीं सूख सकते, बल्कि वह ज़्यादा हरे हो जाते हैं। सूरज की रौशनी और धूप पौधों के उगने बढने और हरा रखने के लिये बहुत जरूरी है।

इसके बाद टीचर ने बच्चों को ऐसी जगह ले जाकर और पौधों को दिखाया जहाँ बहुत कम सूरज की रौशनी पहुँचती थी। बच्चों ने देखा कि वहाँ सब पौधे मुर्झाये हुए थे और उन की पत्तियाँ पीली पड़ रही थीं। इस तरह बच्चों ने अपनी समस्या का हल निकाल लिया (पाठ के इस भाग में इसके तीसरे और चौथे दोनों सोपान आ गये)

कुछ समस्यायें ऐसी होती है जिन में सही हल का फ़ैसला मात्र बहस के जरिये नहीं हो सकता बल्कि इस के लिये कुछ प्रयोग करना आवश्यक होता है, ऐसी हालत में बच्चों से प्रयोग कराना चाहिये।

विशेषतायें

इस विधि में सही मानसिक सक्रियता उभरती है। अतः इसका

शैक्षिक लाभ बहुत है। सीखने का यही असल तरीका है। इस तरह जो इल्म हासिल होता है वह टिकाऊ होता है और लाभदायक भी। क्योंकि वह एक ज़रूरत को पूरा करता है जो बच्चे ने ख़ुद महसूस की है। चूंकि बच्चा बात की तह तक पहुँच जाता है इस लिये वह पूरी तरह इस पर हावी हो जाता है, और जब ज़रूरत पड़े इससे काम ले सकता है।

इस विधि से सही सोच विचार की आदत पड़ती है। जो दैनिक जीवन में काम आती है और सफलता का बहुत बड़ा स्रोत है। एक शिक्षित व्यक्ति और एक अनपढ़ में बड़ा फ़र्क़ यही है कि पढ़ा लिखा आदमी जीवन की समस्याओं को विधिवत हल कर लेता है। और अनपढ़ बिना सोचे समझे काम करना शुरू कर देता है। और जब उसे अपनी गल्ती का एहसास होता है तो दूसरा तरीका काम में लाता है और फिर तीसरा। इस प्रकार उसका बहुत सा समय और श्रम नष्ट हो जाता है।

प्रयोग में लाने की शर्तें

इस विधि को शिक्षा के प्रत्येक सोपान और स्टेज पर और प्रत्येक विषय के शिक्षण में कमोबेश इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन शैक्षिक समस्यायें हर स्टेज पर बच्चों की बौद्धिक क्षमता के अनुरूप होनी चाहियें। विज्ञान के शिक्षण में अन्य विषयों की अपेक्षा यह विधि ज़्यादा आसानी से इस्तेमाल की जा सकती है। किन्तु भाषा, इतिहास, भूगोल जैसे विषयों में भी यह विधि किसी हद तक प्रयोग में लाई जा सकती है।

(जारी.....)

❑❑

शाबाश फ़ैसल!!!

एम० हसन अंसारी

यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन (यू०पी० एस०सी०) अर्थात् संघ लोक सेवा आयोग की सर्वोच्य और माननीय परीक्षा (आई० ए०एस०, आई०एफ०एस०, आई० पी०एस० आदि सेन्ट्रल सिविल सर्विसेज़) में सम्मिलित लगभग चार लाख उम्मीदवारों में शाह फ़ैसल ने प्रथम स्थान प्राप्त कर मुल्क व मिल्लत का नाम ऊँचा किया है। फ़ैसल को कोटिशः बधाई। मुबारकबाद। शाबाश फ़ैसल। फैसल ने यह परीक्षा पहले प्रयास में पास की और टाप किया।

फ़ैसल जम्मू कश्मीर राज्य के कुपवाड़ा ज़िले का निवासी है जहाँ से पहली मर्तबः किसी को यह विशिष्ट सफलता प्राप्त हुई है। डाक्टरी पढ़ने के बाद फैसल को कश्मीर में नौकरी मिल गयी, फ़ैसल आई०ए०एस० की तैयारी, जकात फाउँडेशन ऑफ इण्डिया, दिल्ली के तत्वाधान में करता रहा। और उस की मेहनत और लगन का नतीजा उसे सिविल सर्विसेज़ में टाप करने की शक्ल में मिला।

सिविल सर्विसेज़ 2009 के लिये जो 875 उम्मीदवार चयनित घोषित किये गये हैं उन में 21 मुस्लिम हैं। इन का प्रतिशत ढाई से नीचे है जो बहुत कम है। इसे बढ़ाना चाहिये। हमदर्द और ज़कात फाउंडेशन को पूरा सहयोग मिलना चाहिये।

आई०ए०एस० और दूसरी सिविल सर्विसेज़ की तैयारी में जुटे उम्मदीवारों के लिये परीक्षाफल घोषित होने वाले पल प्रेरणादायक होते हैं, ललक पैदा होती है कि इसी तरह मेरा नाम भी अखबारों में छपे, लोग बधाइयाँ दें। इन क्षणों को दिल में बिठाइये, आँखों में उतारिये, प्लान करिये और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये जाइये। याद रखिये सही दिशा और निर्देशन में की गई मेहनत फलित होती है। विश्वास कीजिये। विषम परिस्थितियाँ व्यक्ति को निखारती हैं, सोने को कुन्दन बनाती हैं। फ़ैसल का मामला इस की रौशन मिसाल है।

❑❑

दअ़वते वलीमा

- मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

निक़ाह के बाद लड़की की तरफ से किसी तरह की दावत वग़ैरा का इहतिमाम करना ग़ैर मसनून तरीका है अलबत्ता जो दो चार आदमी निक़ाह पढ़ाने की ग़रज़ से जाएं उन की ख़ातिर व मुदारात कर देना चाहिये। न तो आम लोगों को खाने पर मदऊ करना चाहिये। न ज़ियादा बारात बुलाना चाहिये अलबत्ता निक़ाह की शिरकत के लिये लोगों को बुलाया जा सकता है यह बुलावा भी बग़ैर ज़हमत व तकलीफ़ के होना चाहिये, (इस में बहुत ज़ियादा इहतिमाम और धूम धाम) नहीं होना चाहिये। इस रिवाज को अपनी सोसाइटी से खत्म करना बहुत ज़रूरी है इस से ग़रीब आदमी सख़्त परेशानी में पड़ जाता है और ना भी पड़े तो यह समझना चाहिये कि जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सहाबा (रज़ि0) ने ऐसा नहीं किया तो हम को भी उन की इताअ़त व मुहब्बत में ऐसा न करना चाहिये।

अलबत्ता निक़ाह के बाद जब लड़की, लड़के के घर यानी ससुराल रूखसत हो कर आ जाए तो उस वक़्त या दोनो में जब मिलाप हो जाए तो उस वक़्त अपनी हैसीयत के मुताबिक़ दावत करना और लोगों को बुलाना सहीह है। इस दावत को शरीअ़त में दावते वलीमा कहा जाता है। वलीमे की दावत सुन्नत है मगर यह दावत उस वक़्त सुन्नत रहेगी जब अपनी हैसीयत के मुताबिक हो और इस की वजह से दावत करने वाले या उसके बीवी बच्चों को तकलीफ का अन्देशा न हो, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कई निक़ाह फरमाये मगर सिर्फ दो मौकओं पर यानी हज़रते ज़ैनब और हज़रते सफीया के निक़ाह में दावत वलीमा दी (और निक़ाहों में भी वलीमा हुआ मगर वहाँ जो लोग मौजूद थे दावते वलीमा खाया– अनुवादक) इस दावत में खाना क्या था वह भी मुलाहजा कर लीजिये। हज़रते जैनब की शादी में आप ने एक बकरी ज़ब्ह कर के उस का गोश्त पकवाया और सब को खिलवाया, हज़रते सफीया के निक़ाह में वलीमे की कैफीयत हज़रते अनस की जबानी सुनिये जो इस वलीमा के दाओ थे वह बयान फरमाते हैं कि हज़रत सफीया के निक़ाह के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जो दावते वलीमा दी उस में न तो रोटी थी न गोश्त था बल्कि उस में यह किया गया कि चमड़े के दस्तरख़्वान पर कुछ खजूरें कुछ पनीर और कुछ घी रख दिया गया और लोगों ने उसे खाया।

इस से मालूम हुआ कि दावते वलीमा में वही होना चाहिये जो आदमी को आसानी से मुयस्सर हो जाए। एक सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ की शादी हुई तो आप ने फरमाया "वलीमा करो चाहे एक बकरी से हो" (मिशकात)

मकसद यह था कि इस मौकिअ पर अपने अजीज़ व अक़ारिब और अहबाब की ज़ियाफ़त करना मुनासिब है लेकिन जो मौजूद हो बस उसी से ज़ियाफत होनी चाहिये अगर तुम्हारे पास एक बकरी हो तो उसी को ज़ब्ह कर के उस का गोश्त लोगों को खिला दें लेकिन इस के लिये ख़्वाह मख़्वाह परेशानी उठाना न चाहिये। इस वक़्त लोगों का हाल यह है कि तहरीरी नवेद में मा हज़र की दावत देते हैं लेकिन मा हज़र नहीं होता सरासर मा गाब होता है जो उस बेचारे को साल में मुश्किल से एक दो दिन नसीब होती होगी इसी पर आप ने फरमाया है कि रूखसती के बाद पहले दिन वलीमा सब से बेहतर है और दूसरे दिन भी कोई मुजायक़ा नहीं और तीसरे दिन का वलीमा सिर्फ नाम व नमूद के लिये है कि आदमी जितनी जल्दी करेगा कम इहतिमाम करेगा और जितनी देर लगाएगा उतना ही ज़ियादा इहतिमाम करेगा और उस का मकसद सिवाए नाम व नमूद के और क्या हो सकता है और शरीअ़त में नाम व नमूद की मज़म्मत आई है, इस से हर मुसलमान वाकिफ है, नाम व नमूद और दिखावे से बड़ी से बड़ी इबादत सवाब के बजाए अज़ाब का सबब बन जाती है।

(इस्लामी फिक्ह भाग–2, पृष्ठ 102,103।)

❑❑

किस्त दो

क्या इस्लाम तलवार से फैला? या सद्व्यवहार से?

- अ़ल्लामा सै० सुलेमान नदवी (रह़०)

संकलन- नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हृदय को मिलाना

धार्मिक प्रचार–प्रसार से सम्बन्धित इस्लाम ने एक और तरीका विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया कि उस व्यक्ति को जिसे इस्लाम की ओर बुलाना हो, प्रेम, नम्रता, सहायता और सहानुभूति से प्रभावित किया जाये क्योंकि मानव, स्वभावतः शिष्ट व्यवहार का अभिलाषी होता है और ये अभिलाषा शत्रुता और हठ की भावना को दूर करके सत्य स्वीकारने की क्षमता को जन्म देता है। हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अनगिनत लोगों को अपनी उदारता और दानशीलता से इस्लाम का अनुयायी बना लिया था। अतः मक्का के कई सरदार इसी भावना से प्रभावित होकर इस्लाम लाए थे। हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हुनैन युद्ध का समस्त धन उन्हीं में बाँट दिया था परिणाम ये निकला कि फिर सत्य के विरूद्ध उनकी गर्दनें न उठ सकीं। सफवान (रज़ि०) जो इस्लाम के घोर विरोधी थे और आप (सल्ल0) से अत्यधिक इर्ष्या करते थे। वह कहते हैं कि मुझको आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बहुत दिया, मै उनसे घोर इर्ष्या करता था परन्तु उनके इन उपकारों ने मुझे ऐसा प्रभावित किया कि अब मेरी दृष्टि में उनसे अधिक कोई प्रिय नहीं। एक बार एक देहाती ने आकर कहा कि इन दोनों पहाड़ों के मध्य जितने रेवड़ (भेड़–बकरियों का समूह) हैं मुझे दे दीजिए, आप (सल्ल0) ने उसको वह सब दे दिया। ये दानशीलता देखकर उसपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने अपने पूरे क़बीले से जाकर कहा, भाइयों! इस्लाम कुबूल करो, मुह़म्मद (सल्ल0) इतना देते हैं कि उनको अपनी भूख और निर्धनता का भय ही नहीं रहता। (मुस्लिम)। एक यहूदी लड़का हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सेवा करता था। वह बिमार पड़ा तो हज़रत मुह़म्मद (सल्ल0) उसकी खैर–खैरियत हेतु गए और जाकर उसके सरहाने बैठ गए, फिर कहा कि लड़के इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले, उसने उचटती निगाहों से बाप की ओर देखा, उसने कहा अबुल कासिम (मुह़म्मद सल्ल0) की बात मान ले, अतः वह मुसलमान हो गया और जब हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वहाँ से उठे तो ये कह रहे थे कि तारीफ उस ख़ुदा की जिसने उसको नर्क (ज़हन्नम) से बचा लिया। (बुख़ारी)

धर्म में ज़ोर–ज़बरदस्ती नहीं

ये वह सत्य है जिसकी गूंज आज हर दरो–दीवार से सुनाई देती है परन्तु शायद लोगों को ज्ञात नहीं कि विश्व में इस सच का एलान सबसे पहले हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ही ज़बान से हुआ। ग़ौर करने वाली बात है कि जो इस्लाम धर्म अपने प्रसार हेतु उपदेशों और प्रवचनों का सहारा लेता हो, जिसने उसके सिद्धान्त बताए हों, जिसने बुद्धि, अंतदृष्टि, विवेक और चिन्तन की हर विषय में लोगों से माँग की हो, प्रत्येक पथ पर बौद्धिक क्षमता, नीति तथा युक्ति का अभिव्यक्ति किया हो, वह क्यों दमन, बलात की पद्धति को स्वीकार कर सकता है? इस्लाम ने केवल ये कि बलात प्रसार को ग़लत समझा बल्कि उसका दर्शनशास्त्र बताया कि धर्म ज़बरदस्ती की चीज़ नहीं। इस्लाम में धर्म का प्रथम अंश श्रद्धा (ईमान) है। श्रद्धा विश्वास का नाम है और विश्व की कोई शक्ति किसी के हृदय में विश्वास का एक कण (ज़र्रा) भी बलात जन्म नहीं दे सकती बल्कि अत्यधिक धार–धार तलवार की नोक भी किसी हृदय पर विश्वास का कोई अक्षर अंकित नहीं कर सकती। पवित्र कुर्आन कहता है "धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं, पथप्रदर्शन (हिदायत) पथभ्रष्टता (गुमराही) से

अलग हो चुकी।" (सूरः बक़र : 34) अन्य स्थान पर है "और कह दे सत्य तुम्हारे परवरदिगार की ओर से है तो जो चाहे स्वीकार करे और जो चाहे अस्वीकार करे।"(सूरः क़हफ़ : 4)

आस्तिकता और नास्तिकता में से किसी एक को चुनने में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। बुद्धि और अंतदृष्टि वाले उसे स्वयं स्वीकार करेंगे और मुर्ख उससे वंचित रहेंगे। अतः बार–बार कहा गया कि संदेष्टा का कार्य लोगों तक ख़ुदा का सन्देश पहुँचा देना है, बलात मनवाना नहीं, अल्लाह फरमाता है, " हमारे सन्देष्टा का यही कर्तव्य है कि वह साफ–साफ हमारा सन्देश पहुँचा दे।" (सूरः माइदः 12) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जो कुरैश क़बीले की शत्रुता और विरोध से अत्यन्त दुखी थे को ढाँढस बंधाया गया" फिर यदि वह इस्लाम के निमंत्रण (स्वीकार करने से) इन्कार करें तो ऐ सन्देष्टा! हमने तुझको उनपर निगहबान बनाकर नहीं भेजा, तेरा कर्तव्य केवल सन्देश पहुँचा देना है।" (सूरः शूरा 5) अन्य स्थान पर कहा गया "ऐ सन्देष्टा! तू केवल उपदेशक है तू उन पर दारोगा बनाकर नहीं भेजा गया।" (सूरः ग़ाशियः 1) किसी धर्म को बलात प्रसारित कराना इस्लाम की दृष्टि में अत्यन्त घृणित कार्य है। पवित्र कुर्आन में है "यदि तेरा परवरदिगार चाहता कि लोगों को आस्तिक (मोमिन) बना दे तो धरती के सभी लोग आस्था (ईमान) ले आते तो क्या ऐ सन्देष्टा! तू लोगों पर ज़बरदस्ती करेगा कि वह ईमान ले आएं।" (सूरः यूनुस 10)

इस्लाम में सत्य की सहायता और असत्य की पराजय हेतु युद्ध वैध है। इसी कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी विवश होकर लड़ना पड़ा। उससे विरोधियों ने ये परिणाम निकाला कि ये केवल इसलिये था कि इस्लाम को तलवार के माध्यम से प्रसारित किया जाए। यद्यपि कुर्आन में एक भी आयत ऐसी नहीं जिसमें किसी गैर–मुस्लिम को बलात मुसलमान बनाने का आदेश हो और न ही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जीवन में कोई घटना ऐसी घटी है जिसमें किसी को तलवार की ज़ोर से मुसलमान बनाया गया हो। हाँ यदि है तो ये हैं " और अगर लड़ाई में कोई अनेकेश्वरवादी तुझसे शरण का अभिलाषी हो तो उसको पनाह दे, यहाँ तक कि वह ख़ुदा का सन्देश सुन ले, फिर उसको वहाँ पहुँचा दे जहाँ वह बेखौफ हो कि ये अशिक्षित लोग है।" (सूरः तौबः 10) इस आयत में ये नहीं कहा गया कि जब तक वह मुसलमान न हो जाए उसको पनाह न दो, बल्कि ये कहा गया कि उसे शरण देकर उसको शरणस्थल पहुँचा दिया जाए, उसे ईश्वरीय कथन (कलामे इलाही) सुनाया जाए ताकि उसे चिन्तन–मनन का अवसर मिले। स्पष्ट है कि जो अनेकेश्वरवादी (मुश्रिक) इस प्रकार मुसलमान होगा उसके धर्म परिवर्तन का कारक तलवार नहीं बल्कि कोई और बात (सत्य सन्देश) है। वास्तविकता तो ये है कि जिहाद की वैधता निर्बलों, उत्पीड़ितों की सहायता, निर्वासितों का अधिकार दिलाने, हज का रास्ता खोलने श्रद्धा और आस्था की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु है।

(जारी.....)

❑❑

तहरीके नदवतुल उलमा .....

मानवता का संदेश (पयामे इन्सानियत) इस्लाहे मुआशरा, दावत व इरशाद के प्लेटफार्म से उक्त विकृत आन्दोलनों का मुकाबला किया और मिल्लत की विभिन्न समस्याओं में साहसपूर्ण निर्णय लिये तथा भयंकर दशाओं की ओर ध्यान दिया।

नदवतुल उलमा के काइदीन (नेता) किलाबन्द दिफाअ (दुर्ग द्वारा सुरक्षा) के काइल न थे उन का दृष्टिकोण यह था कि विरोधी को समझने समझाने से बिना टकराव के समस्याओं का समाधान हो जाता है। मुफक्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह0) ने इसी नियम को अपनाया जिस से उन की बात विरोधी क्षेत्र में भी सुनी जाती थी।

इस लिहाज़ से नदवतुल उलमा की तहरीक (आन्दोलन) एक इस्लाही (सुधारात्मक) तहरीक है जिस का तअ़ल्लुक तालीम से भी है, दावत से भी है और समाजी ज़िन्दगी से भी।

❑❑

चंगेज़ ख़ान

इतिहास के झरोखे से

- इरशाद अली ख़ान

चंगेज़ ख़ान के पिता का नाम ल्यूकाई बहादुर था, जो क़बीला "कियात" का सरदार था और उसकी माँ का नाम ओलान था। ल्यूकाई बहादुर अपने क़बीले का बड़ा ही दिलेर आदमी था और उसका सम्बन्ध 'बोरचीजन' नस्ल से था। कैराइट क़बीले का सरदार टहरल ख़ान, उर्फ ओंग ख़ान ल्यूकाई बहादुर का मुंहबोला भाई था। तेमूचिन (चंगेज़ ख़ान) की पैदाइश के समय उसका बाप ल्यूकाई बहादुर अपने एक दुश्मन से जंग करने गया हुआ था। संयोग से उस दुश्मन का नाम भी तेमूचिन था। तेमूचिन को जंग में पराजित करने के बाद ल्यूकाई बहादुर ने अपने नवजात बेटे का नाम भी अपने उसी दुश्मन के नाम पर तेमूचिन रख दिया। अतः कई वर्ष के बाद इसी तेमूचिन को क़बीले वालों ने "चंगेज़ ख़ान" के नाम से पुकारना शुरू कर दिया।

चंगेज़ ख़ान की माँ ओलान एक बहुत ही सुन्दर औरत थी। ओलान को ल्यूकाई बहादुर ने केत या मकरीत ख़ानदान के रिश्तेदार क़बीले से भगा लाया था, जब उसकी शादी हो रही थी और वह अपने पति के साथ अपने क़बीले से विदा होने वाली थी। ल्यूकाई बहादुर के अपहरण करने के बाद कुछ दिनों तक ओलान ने ख़ूब शोर मचाया, मगर जब चंगेज ख़ान पैदा हुआ, तो ओलान ने हालात से समझौता कर लिया और मानसिक रूप से वह ल्यूकाई बहादुर की बीवी बन गयी।

जनाब एहसान शौक अपनी किताब "चंगेज़ ख़ान से बाबर तक" में चंगेज ख़ान के जन्म के बारे में लिखते हैं कि चंगेज़ ख़ान का जन्म सन् 1162 ई0 के आसपास आधुनिक मंगोलिया के उत्तरी भाग में ओनोन नदी के निकट हुआ था। कहा जाता है कि जब वह अपनी माँ के पेट में था तो उसकी माँ ने स्वप्न देखा कि दो तलवारें उसके पास हैं जो उसके पैरों तले दबी हुई हैं। उनकी नोकें नीले आसमान (मंगोलों के धार्मिक आस्था के अनुसार आसमान उनका देवता था) को छू रही हैं। सुबह होने पर जब चंगेज़ ख़ान की माँ ने अपने उस सपने की ताबीर पूछी, तो उसे बताया गया कि उसके गर्भ से जो बच्चा पैदा होने वाला है, वह बड़ा होकर बहुत बड़ा विजेता बनेगा। अतः उसके ख़्वाब की ताबीर कई वर्षों के बाद पूरी हुई।

ल्यूकाई बहादूर के घर जब चंगेज़ ख़ान पैदा हुआ तो उस वक़्त उसकी मुट्ठी में जमे हुए खून का एक लोथड़ा था। अपनी माँ ओलान के पेट से तेमूचिन खून से रंगे हुए हाथ लेकर पैदा हुआ था। ल्यूकाई बहादुर को जब दुश्मनों ने ज़हर देकर मार डाला, तो उस अवसर पर ओलान ने याक के "नौदुमों वाला" झंडा उठाया और कबीला छोड़ने पर तुले हुए ख़ानाबदोशों को एक झंडे के नीच जमा किया। ओलान ने मेहनत–मशक्कत के साथ–साथ दुख–दर्द को सहते हुए ल्यूकाई बहादुर के बच्चों को भी किसी न किसी तरह पाल–पोसकर ज़िन्दा रखा और उन्हें उनके पूर्वज "बूरजीगोन" के बहादुरी के किस्से सुना–सुनाकर उनकी हिम्मत को बढ़ाती रही। जिनकी ललकार पहाड़ों में बिजली की कडक की तरह गुंजती थी और जिनके हाथ रीछों के पंजों की तरह शक्तिशाली थे।

चंगेज़ ख़ान का भाई "किसार" चंगेज़ ख़ान से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता था। वह तीर चलाने में इतना निपुण था कि अपने इसी कमाल के बिना पर उसने कई बार चंगेज ख़ान की जान बचायी था। कबीले का एक दुष्ट इन्सान जिसका नाम तबतसहिंगरी था, वह चंगेज ख़ान के भाई किसार से बहुत ज्यादा नफरत करता था। अवसर मिलते ही उसने एक दिन किसार को पीट दिया। किसार ने अपने पीटे जाने की शिकायत चंगेज़ ख़ान से की। तबतसहिंगरी, जो एक नजूमी था, जब उसको यह मालूम हुआ कि किसार ने उसकी शिकायत चंगेज

ख़ान से की है तो उसने अप्राकृतिक रूप से भविष्यवाणी करके चंगेज़ ख़ान को इस बात का विश्वास दिलाया कि अगर तुम अपने भाई किसार का क़त्ल कर दोगे, तो तुम अपने क़बीले का सरदार बन जाओ।

चंगेज़ ख़ान उस नजूमी के झाँसे में आकर अपने भाई किसार को बंधक बनाकर खेमे में कैद कर लिया। किसार के क़ैद होने की ख़बर जब उसकी माँ ओलान को मिली, तो उसने किसार को चंगेज़ ख़ान के चंगुल से आज़ाद करवाया। सारी सच्चाई मालूम होने पर चंगेज़ ख़ान ने अपने तीन ताकतवर बहादुरों के हाथों उस नजूमी तबतसहिंगरी को कत्ल करवा दिया। बचपन में एक बार मछली का शिकार करते समय चंगेज़ ख़ान के एक सौतेले भाई ने उसकी मछली चुरा ली, तो चंगेज़ ख़ान ने चोरी की सजा देने के लिए अपने उस सौतेले भाई को तीरों से छलनी करके मार डाला, क्योंकि वह रहम व तरस को व्यर्थ चीज़ समझता था, जो बुजदिली की निशानी थी।

13 वर्ष की उम्र में अपना घर आबाद करने के लिए चंगेज़ ख़ान ने "बोरताई" से शादी की थी। हुआ यूं कि एक बार चंगेज़ ख़ान अपने क़बीले से निकलकर कहीं जा रहा था। रास्ते में वह बोरताई के क़बीले से गुजरा। ज्यों ही चंगेज़ ख़ान की नज़र बोरताई पर पड़ी, वह उसे देखता ही रह गया और मन ही मन वह बोरताई से शादी करने का संकल्प कर लिया, क्योंकि बोरताई बहुत ही खूबसूरत थी। इस घटना के दूसरे दिन चंगेज़ ख़ान का बाप ल्यूकाई बहादुर अपने उन पुराने दुश्मनों के नरगे में आ गया, जिन लोगों से उसकी पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी। उन लोगों ने ल्यूकाई बहादुर को ज़हर देकर मार डाला।

ल्यूकाई बहादुर के मरने की खबर जब चंगेज़ ख़ान को हुई, तो उसने अपने बिखरे हुए क़बीले को इकट्ठा किया और उनके सामने एक ज़ोरदार तकरीर की। तक़रीर के बाद अपने सबसे प्रिय मित्र "बोघूरचू" और अपने भाई "ऑडा" जमूका (जो चंगेज़ ख़ान के बहुत–ही विश्वसनीय साथी थे) और क़बीले के दूसरे लोगों के राय– मश्विरे से मंगोलों का सरदार ख़ान (ख़ाक़ान) की उपाधि धारण करके सिंहासन पर विराजमान हो गया, ताकि क़बीले के सरदार की ज़िम्मेदारी निभा सके।

बोरताई का बाप 'मंलीक' एक ऐसे क़बीले का सरदार था, जिसने कई जंगों में मंगोलों का साथ दिया था। बोरताई दहेज में एक बहुमूल्य तलवार भी लायी, जो चंगेज़ ख़ान को बहुत पसद थी। उत्तरी मैदानों के ख़ानाबदोश बिल्कुल वहशी और निर्दयी थे। इसी क्षेत्र के एक शक्तिशाली क़बीले "मकरीत" ने ल्यूकाई बहादुर की तरफ से "ओलान" को भगा लाने पर और अपने अपमान का बदला लेने के लिए मंगोलों पर धावा बोल दिया और चंगेज़ ख़ान की बीवी बोरताई को जबरदस्ती उठा ले गए। मकरीत के दुश्मन क़बीले ने बोरताइ को क़बीले की परम्परा के अनुसार उसे एक ऐसे व्यक्ति के हवाले कर दिया, जिसकी शादी पहले ओलान से हो चुकी थी, मगर ल्यूकाई बहादुर ने ओलान का अपहरण कर लिया था। इसी कारण से मकरीत क़बीले वालों ने चंगेज़ ख़ान की बीवी बोरताई को उस व्यक्ति के सुपुर्द कर दिया।

अतः इस अवसर पर चंगेज़ ख़ान ने बोरताई की रिहाई के लिए गोबी मरुस्थल के ख़ानाबदोश कबाइल में सबसे शाक्तिशाली तुर्क क़ौम "क़ैराइट क़बीले का सरदार "टहरल ख़ान" उर्फ़ ओंग ख़ान से मदद माँगी, जो उसने फौरन स्वीकार कर ली। एक सर्द रात को योजना के अनुसार मंगोलों और कैराईटों की सेनाओं ने मकरीत क़बीले पर धावा बोला, तो मकरीत कबीले के लोग इस अकस्मात हमले से तितर–बितर हो गये और जान बचाकर भाग गये। इस तरह से कुछ अरसे के बाद चंगेज़ ख़ान को बोरताई दुबारा मिल गयी। रिहाई के वक़्त बोरताई के गोद में एक बच्चा था। यह बच्चा उसी व्यक्ति का था, जिसके सुपुर्द बोरताई को मकरीत के दुश्मन क़बीले वालों ने किया था। चूंकि चंगेज़ ख़ान बोरताई से बेपनाह मुहब्बत करता था, इसलिए उसने उस अवैध संतान को अपने पुत्र की तरह पाला–पोसा और उसका नाम "जोची ख़ान" रखा।

❑❑

किस्त तीन

ख़्वातीने इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

- अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

- मौ० अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी

अपने अधिकारों की रक्षा

यह बतलाने के बाद कि इस्लाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को पिछड़ेपन के गहरे गढ्ढे से निकाला है जिस में दुन्या की तमाम कौमों ने अपनी संयुक्त शक्ति से उसे ढ़केला था। अब हम कुछ इस प्रकार की ऐतिहासिक मिसालें पेश करते हैं जिन से स्पष्ट होगा कि जब इस्लाम ने इस कमजोर प्राणी (औरत) को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया और यह निर्देश दे दिया कि अनुवाद : जिस तरह औरतों पर मर्दों के अधिकार हैं उसी तरह कुछ अधिकार इस प्रकार के भी हैं जिन में औरतें अपने शौहरों (पतियों) से जबरदस्त माँग का अधिकार भी रखती हैं) तो उन्होंने किस आज़ादी और साहस के साथ अपने अधिकारों की रक्षा की और अपनी माँगें इस्लाम की अदालत में पेश की और डिग्रियाँ लीं। आज़ादी, सच्चाई, हक़ परस्ती, साफ़ गोई (साफ बात करना) इस्लाम की आम तालीम है और इस्लाम को मानने वाले की पेशानी (ललाट) इसके प्रकाश से चमक रही हैं और उन के चेहरे जीवन के इन चिन्हों से प्रकाशमान हैं फिर इस्लाम की अनुकम्पा (करम) किसी समुदाय, लिंग (जिंस) के साथ विशेष (मख़सूस) नहीं। औरतों ने भी इस से लाभ उठाया और काफ़ी फायदा उठाया। मिसाल के लिए दो घटनाएं दर्ज की जाती हैं। महर औरतों का एक शरअी हक़ है। हदीसों में दस दिर्हम (अरबी सिक्का) कम से कम की महर मुकर्रर की गई ज़्यादा से ज़्यादा की कोई सीमा नहीं है। मुकर्रर करने का हक़ औरतों को प्राप्त है। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि0) ने महर की संख्या की पुष्टि की जब मालूम हुआ कि हज़रत फात्मा जहरा का महर (जो मशहूर है) इतना है तो आपने मेम्बर पर चढ़ कर फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर के टुकडे के महर से अधिक निश्चित न हो जो लोग इस के खिलाफ़ करें उनका उतना माल जितना उन्होंने अधिक निश्चित किया है मुसलमानों के बैतुलमाल (कोषागार) में जमा किया जाये। एक औरत ने उस सभा में इस आदेश के विरूद्ध आवाज़ उठाई और कहा कि जब खुदा का आदेश है (अनुवाद – अगर तुममें से कोई आदमी अपने माल में से ढेर के ढेर औरतों को दे दे तो फिर उसमें से कुछ न लेना चाहिये) इस आदेश के होते हुए अमीरुल मोमिनीन को क्या अधिकार है कि वह इस अधिक माल को बैतुलमाल में दाखिल कराएं? हज़रत उमर (रज़ि0) ने तुरन्त उसे स्वीकार कर लिया और बिलाझिझक फरमाया : (अनुवाद – एक औरत ने सच कहा और मर्द से गलती हो गई)

इन घटनाओं से कई नतीजे निकाले जा सकते हैं। इस्लामी तालीम के जबरदस्त प्रभाव और पैगम्बर के उत्तराधिकारियों (जाँनशीनों) की सत्य प्रियता और हक़परस्ती की यह एक बड़ी दलील है लेकिन यह नतीजे हमारे विषय से अलग हैं। इस मौके पर देखना यह है कि एक महान सहाबी अमीरुल मोमिनीन रसूल के ख़लीफा के आदेश के मुकाबले में एक साधारण औरत ने किस साहस के साथ अपने एक जाइज हक़ के समर्थन में आवाज़ उठाई और सफल हुई। यह घटना नबुव्वत के युग के बाद की है लेकिन इस से विचित्र एक दूसरी घटना है जिसमें खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुजूर में एक मामूली औरत ने अपने अधिकार का प्रयोग किया और खुदा के पैगम्बर ने उस का समर्थन किया। बरीरः एक दासी थीं। हज़रत आयशा सिद्दीका (रजि0) ने उन्हें खरीद कर आज़ाद कर दिया। आज़ादी के पहले मुग़ीस

नामी एक गुलाम के साथ उनकी शादी हुई थी। बरीरः उन से राजी न थीं। शरअी कानून के अनुसार दासियों को अधिकार प्राप्त है कि वह आज़ादी के बाद अपने पहले पति को अगर चाहें तो अलग कर सकती हैं और चाहे तो उस पहले निकाह को कायम रखें। बरीरः ने अपने अधिकार का प्रयोग किया और मुगीस का निकाह तोड़ दिया। इस के विपरीत मुगीस को उनसे बहुत मुहब्बत थी। इस अलगाव के बाद वह गलियों में परेशान फिरा करते चीख़ मार–मार कर रोते थे लेकिन बरीरः ने उन की चीख़–पुकार की कोई परवाह नहीं की और उनसे दोबारा निकाह करने पर राजी न हुईं। जब हुजूर (सल्ल0) ने मुगीस की यह हालत देखी तो बरीरः से फरमाया (अनुवाद – बेहतर होता तुम उन से प्रत्यागमन (रजअत) कर लेतीं। बरीरः ने कहा (अनुवाद– क्या आप हुक्म फरमाते हैं आप सल्ल0 ने जवाब दिया अनुवाद – हुक्म नहीं **सिफारिश** करता हुँ)। बरीरः ने कहा (अनुवाद – मुझे उस की (मुगीस) कोई आवश्यकता नहीं।) अब बताओ औरतों के अधिकारों की सुरक्षा में इससे अधिक आज़ादी की आवश्यकता है? वास्तव में यह आज़ादी की आखिरी सीमा है। पैगम्बरे इस्लाम की शान देखो कि हुजूर अवगत है कि यह अपना जाइज हक़ इस्तेमाल कर रही है। इसलिए शुरू ही से यह लेहजः (स्वर) इख्तियार किया "बेहतर होता तुम इस से रजअत कर लेतीं" और बरीरः की आस्था व आज्ञापलन का इस घटना से अन्दाज़ा करो "क्या आप मुझे हुक्म देते हैं" अर्थात् अगर यह शरअी हुक्म है तो इनकार की गुंजाइश नहीं लेकिन केवल सिफारिश है तो मुझे अधिकार प्राप्त है। औरतों को इस्लामी क़ानून ने निकाह आदि में पूरी आज़ादी दी है। इस का विवरण कुछ पन्नों के बाद मालूम होगा लेकिन हमारे देश में शरीअ़त (इस्लामी क़ानून) के इन आदेशों पर कौन चलता है? अगर लड़कियाँ ऐसा करें तो उन को बेहया और बेशरम कहा जाय। सच तो यह है कि यदि इस्लामी क़ानून के अनुसार चलना बेहयाई है तो इस बेहयाई की दौलत पर गर्व है। मिसाल के लिए यह दो घटनाएं काफी है लेकिन इस अवसर पर हमारा धार्मिक कर्तव्य है कि मुसलमान औरतों को सचेत कर दें कि वह अपने जाइज शरअी अधिकारों को प्राप्त करने में रीति रिवाज की पाबन्द नहीं बल्कि अपने सामने यह रखें कि खुदा और उसके रसूल ने जो क़ानून बनाया है, वह क्या हुक्म देता है और उसी के सामने सिर झुका दें कि वास्तविक भलाई और शान्ति इसी में है।

शरीअ़ते इस्लामी और औरतों के अधिकारों की सुरक्षा

शरीअ़त ने हमेशा कमज़ोर और असहाय समुदाय की तरफदारी की है अत्याचार से पीड़ित व दुखी लोगों को न्याय और उन के अधिकारों की रक्षा की है। इस का असल उद्देश्य सुधार और समाज को सही मार्ग पर चलने की दावत देना है। इसलिए अधिकतर जिस तरह औरतों के साथ अच्छे व्यवहार का निर्देश दिया गया है, उनकी सान्तवना (दिलजूई) के लिए आदेश दिये गये हैं। उन के साथ नर्मी और दया के व्यवहार की तालीम दी गई है उसी प्रकार हर अवसर पर जहाँ औरतों के अधिकारों के हनन का भय होता है, इस्लाम बडे जोर शोर से अपने मानने वालों को सचेत करता है और उनके अधिकारों का हनन करने से रोकता है। उसने उन तमाम रीति–रिवाजों का उन्मूलन (बेखकुनी) कर दिया जिन में औरत केवल एक पराधीन (महकूम) की हैसियत से नज़र आती है। और वास्तव में यदि ऐसा न किया जाता तो औरतों के जन्म का जो उद्देश्य व अभिप्राय कलामे इलाही (ईशवाणी) ने स्पष्ट किया है वह समाप्त हो जाता। एक स्थान पर कहा गया है कि (अनुवाद – खुदा की निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे नुफूस (जीव) से जोड़े पैदा किये जिन का उद्देश्य यह है कि तुम उन के पास संतोष ओर शान्ति प्राप्त करो और खुदा ने तुम्हारे दर्मियान आपसी प्रेम व मुहब्बत का बीज बो दिया)।

इस कथन को सामने रखो करूणा और प्रेम का तकाजा क्या यह है कि उन के अधिकार नष्ट किये जायें और औरत केवल एक

दासी की तरह तुम्हारी सेवा करे। यही मँशा है कि जो अधिकार शरीअत ने उन के लिए निश्चित किये है उनमें कोई कमी न होने पाये। निकाह का इख्तियार मर्द औरत दोनों को बराबर दिया गया है। मुअकिल बिन इसार (रज़ि0) की बहन को उनके पति ने तिलाक दे दी। इद्दत समाप्त होने के बाद शरअी क़ानून के अनुसार उन्होंने फिर निकाह की इच्छा प्रकट की। दोनों राजी थे लेकिन मुअकिल उस में रूकावट बने हुए थे इस अवसर पर यह आयत नाज़िल हुई। (अनुवाद – इस से न रोको कि वह (अपने पूर्व) पतियों से निकाह करें) मुअकिल उनके सगे भाई थे। कहा जा सकता था कि उन का मना करना किसी नीति के कारण होगा लेकिन उनको केवल इसलिये रोका गया कि तुम में से हर व्यक्ति को अपनी सीमा से बाहर कदम नहीं रखना चाहिये। किस से निकाह करने या न करने का अधिकार औरतों को है। मर्दों को बिना उनकी आज्ञा और मरजी के दखल देने की कोई ज़रूरत नहीं।

अरब में यह बुरी रीति थी कि पति के देहान्त के बाद उस की पत्नी सौतले लड़के के हिस्से में विरासतन (उत्तराधिकार में) आ जाती और मरने के बाद दूसरे छोड़े गये माल की तरह सौतली माँ के बारे में उनको अधिकार होता कि चाहें खुद निकाह कर लें या चाहें तो किसी दूसरे से कर दें। कुछ कबीलों में यह भी होता था कि बाप के मरने के बाद सौतेली माँ पर जिस लड़के की चादर पड़ जाती वह उसके अधिनस्थ हो जाती। इस लज्जा जनक रीति की कल्पना से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। औरतों के साथ कितना अन्याय है। किस बेदरदी से दूसरे के अधीन बनाया जाता था। कुर्आन ने इसकी बिल्कुल मनाही कर दी। (अनुवाद – ऐ मुसलमानों! औरतों के जबरदस्ती वारिस न बनो) निकाह की इस सूरत को और मौकों पर मना किया गया है लेकिन इस आयत से केवल यह तात्पर्य है कि औरतों पर इस प्रकार की जबरदस्ती जारी रखना तुम्हारी इस्लामी शान के खिलाफ़ है। खुनसा बिन खुद्दाम का निकाह उन के पिता ने बचपन में ही कर दिया था लेकिन यह राजी न थीं। उन्होंने आकर रसूल के दरबार में शिकायत की। आप (सल्ल0) ने निकाह निरस्त कर दिया।

यह औरत इस्लाम के इतिहास में स्त्रियो के व पत्नी अधिकारों में पहली उपकारी महिला हैं जिसने मानों इस बात की नीव रखी कि अगर औरत की रजामन्दी और खुशी के बिना कोई शादी की जाये तो वह उसे निरस्त कराने का अधिकार रखती है। इन्हीं अधिकारों की सुरक्षा के लिए शरीअत ने खुला (निकाह को निरस्त करवाने) लेने का अधिकार दिया है जो लगभग मर्दों के तिलाक के अधिकार के बराबर है। आयत 3 से इस की तरफ संकेत है। बाज इस तरह के अधिकार हैं जिन में मर्द और औरत दोनों बराबर है लेकिन ऑ हज़रत (सल्ल0) ने औरतों के हक के अधिकार का ध्यान रखा है। जैसे माँ बाप दोनों की सेवा करना औलाद का कर्तव्य है लेकिन हुज़ूर (सल्ल0) ने बहुत से मौकों पर माँ ही को वरीयता (तरजीह) दी है। बुख़ारी की एक रिवायत है कि एक बार एक शख़्स ने हुज़ूर (सल्ल0) से पूछा (अनुवाद – मेरे अच्छे व्यवहार और नेक सुलूक का अधिकतर हक़दार कौन है? आप (सल्ल0) ने फरमाया तुम्हारी मां।

इन कर्तव्यों को अदा करने के लिए आप (सल्ल0) ने लोगों को बड़ी से बड़ी सेवाओं से रोक कर इनको अदा करने की ताकीद की। नसाई में है कि जाहिमा सलमी नामी एक व्यक्ति आप (सल्ल0) के पास आए और जंग में शरीक होने की आज्ञा चाही। आप (सल्ल0) ने पूछा क्या तुम्हारी माँ हैं? उन्होंने कहा हाँ। आदेश हुआ (अनुवाद – उनकी सेवा करो कि जन्नत उनके कदमों के नीचे है) इस ताकीद की वजह यही है कि औरतों को कमजोर और बूढ़ी समझ कर लोग इनके अधिकारों को पूरा करने में सुस्ती करेंगे। हर हाल में इस्लाम ने औरतो के अधिकारों की रक्षा की और मुस्लिम महिलाओं को इस का पूरा अधिकार दिया कि वह अपने सही अधिकारों की माँग जोर–शोर से करें।

(जारी.....)

❑❑

आर टी ई ऐक्ट 2009

- एम० हसन अंसारी

क्या है आर टी ई ऐक्ट?

राइट टू एजूकेशन अर्थात् शिक्षा का अधिकार अधिनियम जिसका पूरा नाम 'दी राइट ऑफ चिल्ड्रेन टू फ्री एण्ड कम्पलसरी एजूकेशन एक्ट 2009' भारत सरकार द्वारा बनाया गया एक क़ानून है जो जम्मू कश्मीर रियासत को छोड़कर पूरे देश में पहली अप्रैल 2010 से लागू हो चुका है। यह उसी तरह का एक क़ानून है जैसे आर टी आई अर्थात् राइट टू इन्फार्मेशन (सूचना का अधिकार अधिनियम 2005)। यह ऐक्ट भारत का राजपत्र, असाधारण (दी गजेट ऑफ इण्डिया इक्सट्रआर्डिनरी) संख्या 39 नई दिल्ली वृहस्पतिवार, दिनांक 27 अगस्त 2009 में प्रकाशित हुआ है। पहली अप्रैल 2010 से भारत दुनिया के उन 135 देशों की सूची में शामिल हो गया है जहाँ शिक्षा का अधिकार क़ानून लागू है। यह क़ानून 6 से 14 वर्ष वाले उन बच्चों के लिये है जो अनपढ़ हैं और इस में एक चौथाई अर्थात् 25 प्रतिशत सीटें समाज के कमजोर वर्ग के लिये रखने का प्रावधान है। स्कूल में कोई कैपीटेशन फीस नहीं ली जायेगी। जहाँ स्कूल नहीं हैं राज्य सरकारें तीन साल के अन्दर स्कूल कायम करेंगी। स्कूल से तात्पर्य मान्यता प्राप्त स्कूल जहाँ एलीमेन्ट्री (इब्तिदाई) शिक्षा अर्थात् कक्षा एक से आठ तक तालीम दी जाती है और जिस में (i) सक्षम सरकार अथवा स्थानीय प्राधिकरण (लोकल अथार्टी) द्वारा स्थापित, खुद का अथवा नियंत्रित स्कूल। (ii) सक्षम सरकार अथवा स्थानीय प्राधिकरण से कुल अथवा आँशिक खर्च चलाने के लिये सहायता प्राप्त स्कूल। (iii) निर्दिष्ट वर्ग (स्पेसीफाइड) कैटेगरी के स्कूल और (iv) सक्षम सरकार अथवा स्थानीय प्राधिकरण से किसी प्रकार की सहायता या ग्रान्ट नहीं प्राप्त करने वाले असहायता प्राप्त स्कूल शामिल हैं। लोकल अथार्टी का मतलब नगर निगम अथवा म्यूनिपिल कॉउसिल या जिला परिषद या नगर पंचायत या पंचायत जिस नाम से भी पुकारा जाता हो। ऐक्ट के लागू हो जाने के बाद, सक्षम सरकार अथवा लोकल अथार्टी द्वारा कायम, संचालित और नियंत्रित स्कूल के अलावा कोई स्कूल निर्दिष्ट अथार्टी द्वारा सर्टीफिकेट ऑफ रिकगनिशन (मान्यता) प्राप्त किये बिना न कायम किया जायेगा न संचालित किया जायेगा।

शिक्षा का महत्व

शिक्षा के महत्व को सबने माना है और कुछ ने जाना है। "ज्ञान की खोज में भोमबत्ती की तरह अपने को पिघला दो, चाहे इस के लिये तुम्हें सारे भूतल पर यात्रा करनी पड़े, एक कहावत हैं शिक्षित समाज सभ्य समाज होता है, तरक्की करता है। ज्ञान उजाला है, अज्ञानता अंधेरा। विद्या इन्सान को विनम्र बनाती है, इल्म इन्सानियत का जेवर है। राजा भ्रतृहरि ने तो अपने नीतिशतक में यहाँ तक कहा कि जिस मनुष्य में न विद्या, न तपो, न दानम, ज्ञानम, न शीलम, न गुणो, न धर्मः वह इस फानी संसार में, धरती का भार बन कर इन्सान की शक्ल व सूरत में हिरन की तरह चलता फिरता है। राजा भ्रतृहरि के नीतिशतक संस्कृत साहित्य में वैसा दर्जा रखते हैं जैसा फारसी साहित्य में मौलाना रूम की मसनवी या शेख सअदी (रह०) की गुलिस्ताँ बोस्ताँ की हिकायतें। आज से साढ़े चौदह साल पहले पवित्र कुरआन की पहली 'वहीय' की शुरूआत ही 'इकरा' शब्द से होती है जिस का अर्थ है 'पढ़ो'।

मौजूदा वस्तु स्थिति

भारत में एक स्रोत के अनुसार 6–14 वयवर्ग (ऐजग्रुप) के लगभग 200 मिलियन बच्चे स्कूल जाते हैं, किन्तु 8.1 मिलियन बच्चे स्कूल नहीं जाते। यह संख्या निरन्तर बढ़ रही है। जो बच्चे स्कूल जाते हैं उन में कुछ ऐसे हैं जो बीच में ही घर बैठ जाते हैं और पढ़ाई छोड़ देते हैं। इन्हें 'ड्राप आउट' कहा जाता है। 6–14 वयवर्ग के वर्ष 2008–09 में

ड्राप आउट्स की संख्या 2.7 मिलियन थी, इन ड्राप आउट्स में सर्वाधिक तादाद समाज के कमज़ोर वर्ग के परिवारों के बच्चो की है जिन्हें घर के लोग कमाने खाने की चिन्ता से ग्रसित होकर अपना हाथ बटाने के लिये रोक लेते हैं और बीच ही में पढ़ाई बन्द करा देते हैं।

मुस्लिम समाज, जो भारत का सब से बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है, में एलीमेन्ट्री एजूकेशन से वंचित और ड्राप आउट्स की संख्या ख़ासी है। यह चिन्ता का विषय है। वस्तुस्थिति यह है कि मुस्लिम समाज के गाँव और शहर की झुग्गी झोप–ड़ियों के और खाना बदोशों की तरह ज़िन्दगी बसर करने वालों के जो बच्चे (6–14 वयवर्ग के) एलीमेन्ट्री एजूकेशन से वंचित कम नाबलद (अनभिज्ञ) ज़्यादा हैं, रोजी–रोटी की तलाश में लगते जा रहे हैं और यह ग्राफ़ ड्राप आउट्स के ग्राफ के साथ बढ़ता ही जा रहा है, जिन धंधों में यह बच्चे लगते जा रहे हैं उन में कुछ इस तरह के हैं बीड़ी बनाना, पालिश करना (फर्नीचर्स), रंगाई– पुताई, पाप अर्थात् प्लास्टर आफ पेरिस की डिजाइन से घरों की छतों और दीवारों पर नक्काशी करना, गैरेज में काम करना, स्कूटर रिपेयरिंग, गारा मिट्टी, ड्राइवरी (यद्यपि 18 साल की उम्र से पहले ड्राइविंग लाइसेंस नहीं बनता, फिर भी हेल्परी के बहाने दो पहिया, तीन पहिया, चार पहिया वाहनों और ट्रकों पर काम करते खासी तादाद में बच्चे मिलेंगे) फसलों की कटाई मड़ाई, ईंट भट्टा पर, होटलों में, ज़रदोजी का काम, सिलाई, कढ़ाई, चाँदी के वरक बनाना, टेंटेज, कालीन की बुनाई, डेंटिंग पेंटिग का काम आदि।

कार्यान्वयन

भारतीय संविधान यूनियन और स्टेट अर्थात् केन्द्र तथा राज्य सरकारों के पावर्स (शक्तियाँ और इख़्तियार) को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। कुछ चीज़ों की ज़िम्मेदारी केवल केन्द्र सरकार की है, कुछ अन्य चीजों की ज़िम्मेदारी राज्य सरकारों की है, जब कि कुछ में दोनों की हिस्सेदारी हैं अतः संविधान में तीन सूचियाँ हैं यह लिस्टें ऐसे विषयों की हैं जिन पर क़ानून बनाया जा सकता है : (i) यूनियन लिस्ट, (ii) राज्य या स्टेट लिस्ट और (iii) कान्करेन्ट,अर्थात् संवती सूची यूनियन लिस्ट में 97 विषय हैं। इसमें रक्षा अर्थात् डिफेंस करेंसी, सिक्के, विदेश के मामले, फारेन ट्रेड, रेल तथा संचार, नागरिकता, जनगणना, नाप तौल, इन्श्योरेंस जैसे विषय शामिल हैं।

स्टेट लिस्ट में 66 विषय हैं जिन में कुछ एक इस तरह हैं लॉ एण्ड आर्डर (शान्ति व्यवस्था), शिक्षा, सिंचाई, स्वास्थय सेवायें, मत्सय, सड़कें, लोक निर्माण, बैंड रेवेन्यू, लॉ कोर्ट्स।

कान्करेन्ट लिस्ट में 47 विषय हैं जिन पर यूनियन और राज्य सरकारें दोनों क़ानून बना सकती हैं, दोनों में कोई मत–भेद होने की दशा में यूनियन लॉ की बात मानी जायेगी। इस लिस्ट में शामिल कुछ विषय हैं– प्रेस, लेबर वेल्फेयर, सिविल प्रोसेजर, मूल्य नियन्त्रण, चैरिटिएबल संस्थायें (दान), फँड्स, फैकट्रीज, बिजली, शादी तिलाक।

यद्यपि यह सूचियाँ लम्बी हैं, फिर भी कुछ ऐसे विषय हो सकते हैं जो इन तीनों में शामिल न हों। इस के लिये हमारे संविधान में यूनियन गवर्नमेंट को रेजीडुअरी (अवशिष्ट, बचा हुआ) पावर्स दिये गये हैं। इसं का अर्थ यह होता है कि जो विषय इन तीनों लिस्टों में न हों उन के बारे में यूनियन गवर्नमेंट क़ानून बना सकती है और इसे कार्यान्वित कर सकती है।

आर टी ई की दफा 8 में कहा गया है कि एप्रोपीएट अर्थात् राज्य सरकारें, गवर्नमेन्ट की ड्यूटी होगी कि वह प्रत्येक बच्चे को फ्री और कम्पलसरी एलीमेन्ट्री एजूकेशन मुहैया करें। इस के लिये बुनियादी सहूलतों (इन्फ्रास्ट्रकचर) के सिलसिले में जहां स्कूल नहीं हैं वहाँ तीन साल के अन्दर स्कूल कायम करना, टीचरर्स की ट्रेनिंग, और शिक्षण की सहायक सामग्री (लर्निंग इकीपमेंट) मुहैया करना आदि शामिल हैं।

पैरेन्टस और गार्जियन्स की डयूटी होगी कि उन का बच्चा एलीमेंट्री एजूकेशन हासिल करने पास के स्कूल में जाये।

एलीमेन्ट्री एजूकेशन के पूरा किये बिना कोई बच्चा किसी बोर्ड परीक्षा को पास नहीं कर सकेगा। (आर्टिकल 30)

कोई व्यक्ति जिसे आर टी ई ऐक्ट से सम्बन्धित कोई शिकायत हो, वह लिखित शिकायत सक्षम अधिकारी को दे सकता है जो तीन माह के अन्दर, शिकायत कर्ता को सुनने के बाद, अपना फ़ैसला देगा।

आर टी ई ऐक्ट के कार्यान्वयन के साथ केन्द्र और राज्य सरकारें नेशनल/राज्य एडवाइजरी कॉउसिल का गठन करेंगी। कॉउसिल के सदस्यों की संख्या पन्द्रह से ज़्यादा नहीं होगी। सदस्य उन लोगों में से होंगे जो एलीमेंट्री एजू0 के क्षेत्र में जानकारी और फील्ड में कार्य करने का प्रेक्टिकल अनुभव रखते हों, और शिशु के विकास का ज्ञान रखते हों।

आशंकायें और ख़दशात

ऐक्ट के कार्यान्वयन में टीचर्स की कमी और फंड्स की बड़ी मात्रा में उपलब्धता समय से न हो पाने की आशंका और चैलेंज सामने दिखता है। एक अन्दाज़े के अनुसार देश में इसे लागू करने पर 14498 करोड़ रूपये प्रतिवर्ष खर्च होंगे, और नान रिकरिंग (अनावृत्तक) खर्च 3797 करोड़ रूपया आँका गया है। प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि फंड्स की कमी नहीं होने दी जायेगी। उन के आश्वासन पर विश्वास किया जाना चाहिये।

किसी अभियान और क़ानून से वाँछित परिणाम सामने आये इस के लिये जनजागरण और अवाम की भागीदारी का बड़ा महत्व है, अनुभव बताता है कि आज़ादी के बाद उत्तर प्रदेश में विगत साठ वर्षों में निरक्षरता दूर करने और साक्षरता बढ़ाने के जो प्रयास सरकार/स्वंय सेवी संस्थाओं द्वारा किये गये उन से खातिर ख्वाह नतीजा बरामद नहीं हुआ। 1950 के आसपास चलाया गया साक्षरता अभियान, साक्षरता निकेतन, प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय की स्थापना (1978), अनौपचारिक शिक्षा की परियोजना और सर्व शिक्षा अभियान (एस एस ए जो बहुत कामयाब रहा) इन सब की उपलब्धियों को वयोवृद्ध जानकार, जिन्हों ने इन के क्रिया कलापों को देखा है, जानते हैं।

आशंकायें और ख़दशात होते हैं। इन पर विचार मंथन कर के सकारात्मक सोच के साथ निष्टा–पूर्वक समर्पित प्रयास वाँछित परिणाम देता है। ऐसा हमारा विचार है।

जिन मदरसों/संस्कृत पाठ–शालाओं में एलीमेन्ट्री एजूकेशन की शिक्षा सम्प्रति में नहीं दी जा रही है वहाँ इस की व्यवस्था शिक्षा–सत्र 2010–2011 से की जानी चाहिये।

❑❑

इस्लाम में दीन व दुनिया अलग–अलग नहीं

"दुनिया में जिस चीज़ ने सब से ज़्यादा गुमराही फैलाई वह दीन और दुनिया का फ़र्क है, दीन का काम अलग किया गया और दुनिया का काम अलग, ख़ुदा का हुक्म अलग ठहराया गया, और हुकूमत (क़ैसर– बादशाह) का हुक्म अलग। दुनिया की प्राप्ति का अलग रास्ता बताया गया और दीन की प्राप्ति का अलग। इस्लाम के नवजवानों! यह सबसे बड़ी गल्ती थी जो दुनिया में फैली थी। इस ग़ल्ती का पर्दा मुहम्मद (सल्ल0) के सन्देश ने जगमगाती किरनों से चाक कर दिया। उसने बताया कि निष्ठा और नेक नीयती के साथ इसी दुनिया के कामों को ख़ुदा के बताये हुए उसूल के मुताबिक अंजाम देना दीन है। अर्थात् ख़ुदा के उसूल के मुताबिक दुनियादारी ही दीनदारी है। लोग समझते हैं कि जिक्र व फिक्र (जप), गोशःनशीनी (एकान्त), अलग–थलग, किसी गुफ़ा और खोह में बैठकर ख़ुदा को याद करना दीनदारी है, और दोस्त व प्रियजन, आल– औलाद, माँ–बाप, क़ौम और मुल्क और स्वयं अपनी आप मदद, रोजी– रोटी की तलाश और बच्चों का पालन–पोषण दुनियादारी है। इस्लाम ने इस ग़ल्ती को मिटाया, और बताया कि ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक इन कर्तव्यों को बखूबी अदा करना भी दीनदारी ही है।"

(अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0)
(खुत्बाते मद्रास)

❑❑

डायबिटीज की होमियोपैथिक चिकित्सा

– डा0 महेश प्रसाद गुप्ता

डायबिटीज पर जिन होमियो–पैथिक औषधियों का विशेष अधिकार हे, वे इस प्रकार है :

(1) सीजियम जम्बोलिनम क्यू (Q)

यह औषधि जामुन नामक फल से तैयार की जाती है। शक्करयुक्त बहुमूत्र में बहुत सफलता के साथ व्यवहार की जाती है। डायबिटीज की चिकित्सा करते समय यदि इस औषधि पर विचार न किया तो बहुत संभव है चिकित्सा अधूरी रह जाये। प्रमुख लक्षण है : पेशाब में अधिक मात्रा में शक्कर, टेस्ट से परीक्षण में मूत्र नाँरगी लाल रंग का हो, उत्तम संतुलित भोजन के पश्चात् भी शरीर सूखता जाये और शरीर में जगह–जगह घाव पैदा हो। कुछ दिनों तक लगातार सेवन से निश्चय आरोग्यकारी है। यदि यह दवा उपलब्ध न हो पाये तो जामुन की गुठली सुखाकर उसका पाउडर बना लिया जाये और दिन में 2–3 बार, एक बार में लगभग 1 चम्मच पाउडर फाँककर ऊपर से आधा पात्र गरम जल पी लेने पर लगभग वही सुपरिणाम मिलते है। एलोपैथी में भी जामुन से एक दवा बनी है और 'जाम्बोलिन नाम से दवा विक्रेताओं के यहाँ मिलती है। आयुर्वेद में भी डायबिटीज की औषधियाँ जामुन से ही बनती है।

(2) एसेटिक एसिड 6,30 :

इसके प्रमुख लक्षण है : शरीर में चुनचुनी, जलन, चमड़ा रूखा और तेजहीन, बहुत तेज प्यास, कभी–कभी पसीना, दिन में कई बार बिल्कुल साफ पानी जैसा पेशाब हो, कभी–कभी कै व दस्त, हाथ–पैर, चेहरे आदि पर सूजन। सूजन न रहने पर भी यह दवा प्रयोग की जा सकती है, वैसे सूजन रहने पर अधिक लाभकारी है।

(3) एसिड फास 1X,6,30 :

स्नायविक कमजोरी और अति मैथुन के कारण उत्पन्न डायबिटीज, पेशाब का रंग दूधिया और मात्रा में अधिक, नपुंसकता शरीर व मस्तिष्क दोनों कमजोर। भोजन के पश्चात् सुबह और शाम आधा पाव पानी में 5 से 10 बूंद 1X पोटेंसी में देना चाहिये। कुछ दिनों तक 1X, उसके बाद 3X, फिर 6X और इसी तरह बढ़ाते हुए 30 तक लाइए, शरीर व मन दोनो स्वस्थ हो जाएंगे।

(4) यूरेनियम नाइट्रिकम 1X,3X :

यह सीजियम जम्बोलिनम के टक्कर की दवा है। प्रमुख लक्षण है– शक्कर की मात्रा अधिक, पेशाब कई बार अधिक मात्रा में हो, राक्षसी भूख, फिर भी शरीर सूखता चला जाये, बहुत तेज प्यास, पेट में वायु का संचय आदि। 1X, 2X या 3X दिन में कई बार 10–15 दिन तक देने से बहुत लाभ उठाया जा सकता है। उसके पश्चात 6 और 30 शक्ति में प्रयोग कीजिए।

डायबिटीज की प्रमुख औषधियों में बायोकेमिक औषधि नैट्रम सल्फ भी है। डा0 शुश्लर ने नैट्रम सल्फ की बहुत प्रशंसा की है। डायबिटीज का कारण पैक्रियाज द्वारा इंसुलिन का उत्पादन न करना है और यह क्षमता पैदा करती बताई गई है कि उचित परिमाण में इंसुलिन पैदा हो। 3X पोटेंसी में सेवनीय है, धीरे–धीरे बढ़ाकर 30X तक लाई जा सकती है। महत्वपूर्ण औषधि है।

अन्य बायोकेमिक औषधियाँ जो काम में आती है वे इस प्रकार हैं :

केल्केरिया फास 3X, या 12X : पाइल्यूरिया यानि बहुमूत्र, शारीरिक कमजोरी, तेज प्यास, मुंह व जबान सूखी, नमक व मिट्टी खाने की इच्छा।

फेरम फास 12X : नाड़ी तेज व शरीर में कहीं पीड़ा, शरीर में गर्मी व जलन महसूस हो।

कालीम्यूर 3X : पेशाब अधिक व शक्कर युक्त, कमजोरी।

काली फास 3X : स्नायविक कमजोरी, नींद का अभाव, अंग–अंग शिथिल, तेज और अप्राकृतिक भूख आदि।

मैग्नेशिया फास 3X : पेट में पीड़ा वायु का संचय, गरम सेंक से आराम।

नैट्रम फास 3X : उदर में अम्लता, पेशाब की लगातार इच्छा परंतु रूक–रूक कर हो, डायबिटीज के साथ लीवर में भी दोष आ गया हो।

शेष पृष्ठ 11

कैसे रहें मधुमेह के साथ

- डॉ० दीपक भाटिया

मधुमेह के साथ जीना एक कला है। जीवन के अति साधारण पक्ष, जिन पर आम आदमी अक्सर सोचता तक नहीं, उनके प्रति सहज भाव से सजग रहना इस कला का हिस्सा है। छोटी–छोटी बातें जैसे त्वचा की संभाग, पैरों की देखरेख, टाँगों की वर्जिश, दाँतों का ध्यान, वजन पर नज़र, बाहर खाने–घूमने जाने पर अपना ख्याल, मन चंगा रखने की कोशिश–जीवनक्रम में गूंथ लेने से सुख रहता है। मधुमेह के साथ निर्वाह तब ज़्यादा आसान हो जाता है।

त्वचा की संभाल

मधुमेह से त्वचा ज़्यादा नाजुक हो जाती है। इसलिए बैक्टीरिया और फफूंदी रोगाणु उस पर आसनी से घर कर सकते हैं। त्वचा को उनसे बचाने और स्वस्थ रखने के लिए छोटे–छोटे एहतियात ज़रूरी है :

1. स्नान लेने के बाद पूरे जिस्म को ठीक से सुखा लेना आवश्यक होता है। नितम्बों के बीच के हिस्से, बगलों, अंगुलियों के बीच और स्त्रियों में स्तनों के नीचे वाले भाग मे रोगाणु ज़्यादा आसानी से टिक जाते हैं। इसलिए उनकी सफाई के बारे में खास ख्याल करना पड़ता है।

2. स्नान करते वक़्त ज़्यादा गर्म पानी इस्तेमाल न करें। तेज किस्म का साबुन भी ठीक नहीं रहता।

3. जिन दिनों मौसम ज़्यादा शुष्क हो, उन दिनों त्वचा पर म्वाइ–स्चराइजर या तेल लगाएं।

4. जिस्म के किसी भी हिस्से में जरा सी खरोंच, छोटे से छोटे जख्म को नज़रअंदाज न करें। यदि वह हिस्सा लाल हो जाए, उसमें दर्द या सूजन हो जाए तो डाक्टर से सलाह लें। वजन ठीक कर लेने से नॉन–इंसुलिन–डिपेंडेंट डायबिटीज में काफी फायदा पहुंचता है। दूसरे रोग होने की आशंका भी घट जाती है। इलाज ज़्यादा फलदायी होता है।

पैरों की देखरेख

1. सुबह नहाते वक़्त और रात को सोने से पहले पैरों को गुनगुने पानी से ठीक से धोएं।

2. पैरों, खासतौर से अंगुलियों के बीच की जगह, को ठीक से सुखाएं। ज़्यादा जोर से रगड़ें नहीं। इससे नाजुक त्वचा फट सकती है।

3. पैर मुलायम रखने के लिए म्वाइस्चराइजिंग लोशन का इस्तेमाल करें पर इसे पैर की अंगुलियों के बीच न लगाएं।

4. पैरों पर नित्य धुले हुए साफ मुलायम मोजे या स्टाकिंग पहनें। ध्यान रहे कि उसका इलास्टिक इतना तंग न हो कि त्वचा कस जाए।

5. पैरों को सूखा, साफ–सुथरा और गर्म रखें। मौसम के मुताबिक सूती या ऊनी मौजे और मुलायम चमड़े के सही नाप के जूते पहनें। जूते खरीदते वक़्त ध्यान रखें कि उनकी ऐड़ी छोटी हो, जूता आगे से इतना खुला हो कि अंगुलियों और पंजों पर दबाव न आएं। नए जूते लेने के बाद उन्हें पहले दिन आधा घंटा, दूसरे दिन डेढ़ घंटा, तीसरे दिन ढाई घंटा इस क्रम से धीरे–धीरे पहनने की आदत डालें। कहीं जोर, दबाव पड़े तो जूते बदल लेना ज़्यादा बेहतर होता है।

6. जूतों की नित्य जाँच करें कि उनमें कंकड़, पत्थर, कील या दरार तो नहीं, जो पैरों की त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

7. जहाँ तक संभव हो, नंगे पैर न चलें।

8. पैरों की अंगुलियों के नाखून सीधा–सीधा काटें। इसके लिए ब्लेड, चाकू वगैरह का इस्तेमाल न करे नेल कटर या छोटी केंची प्रयोग में लाएं। नाखूनों के कोने काटने की चेष्टा न करें। यदि नाखून ज़्यादा सख्त हो जाएं तो उनें मुलायम बनाने के लिए नित्य रात में सोने से पहले गुनगुने पानी में एक चम्मच बोरेक्स डाल कर दस मिनट के लिए पाँव उसमें रखें।

9. पैरों की त्वचा पर किणाक (कैलस) या मस्सों (कॉर्न) का उभरना यह संकेत करता है कि उस भाग की

त्वचा पर असामान्य दबाव है या उस पर किसी चीज की बार–बार रगड़ लग रही है। जूते–चप्पल या मोजे–स्टाकिंग्स सही माप के नहीं है, उन्हें बदल लें। मस्सों या किण्कों को काटने की कोशिश न करें। डाक्टर से सलाह लें।

10. छोटे से छोटे घाव या जख्म की हिफाजत से मरहम–पट्टी करें।

पैरों–टाँगों के व्यायाम

मधुमेह में पैरों–टाँगों में खमन का दौरा कमजोर होने की आशंका ज़्यादा रहती है। इससे बचे रहने के लिए यह ज़रूरी है कि तम्बाकू का किसी भी रूप में सेवन न करें। तम्बाकू रक्त–धमनियाँ में सिकुडन पैदा करता है। इससे खून का दौरा और कमजोर हो जाता है।

पैरों–टाँगों में बेहतर रक्त–संचार कायम रखने के लिए नित्य किए गए कुछ विशेष व्यायाम उपयोगी साबित होते है :

1. कुर्सी या किसी ठीक ऊँचाई की चीज को पकड़ कर खड़े हों। अब कुर्सी पकड़े–पकड़े पैरों के पंजों पर अपने आपको उठाएं। दस तक गिनती गिनें। फिर नीचे लौट आएं। यह व्यायाम दस बार दोहराएं।

2. पंजों के बल फुर्ती से सीढ़ियाँ चढ़ें।

3. पंजों के बल खड़े हों। दस तक गिने। फिर ऐडी नीचे ले आएं। यह प्रक्रिया दस बार दोहराएं।

4. एक पैर के नीचे थोड़ी ऊँचाई का कोई प्लेटफार्म रखें। पास में कोई कुर्सी रख लें। उस पर हाथ टिका कर सहारा ले लें। अब दूसरे पैर को 10 बार इधर से उधर झुलाएं। पैरों की स्थिति अदल–बदल कर यही प्रक्रिया फिर से दोहराएं।

5. फर्श पर हाथों को पीछे टिका कर बैठें। पैरों को ऊपर उठा कर एक–एक कर घुमाएं।

6. कुर्सी पर बैठ कर अपने हाथ छाती से सटाते हुए एक–दूसरे पर बाँध लें। फिर दस बार उठें और बैठें।

7. एक हाथ से कुर्सी पकड़ कर, पीठ बिल्कुल सीधी रखते हुए घुटनों को दस बार मोड़ें।

8. अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ दीवार पर टिका लें। खुद थोड़ी दूरी रख कर खडे हों। पैरों के तले पूरी तरह जमीन से लगाए रखें। पीठ और टाँगें बिल्कुल सीधे रखते हुए हाथों के सहारे जिस्म दीवार के पास ले जा कर वापस लाएं। यह क्रिया दस बार दोहराएं। इससे टाँगों में खिंचाव (क्रैम्पस) की परेशानी से राहत पाने में सहायता मिलेगी।

9. रोजाना आधें से एक घंटे के लिए सैर के लिए जाएं। तेज रफ्तार से चलना टाँगों के साथ–साथ पूरे जिस्म के लिए फायदेमंद है। पर व्यायाम कार्यक्रम बनाने से पहले अपने डाक्टर की अनुमति अवश्य ले लें।

वजन पर नज़र रखें

कोशिश करें कि आपका वजन आपकी लंबाई और उम्र के हिसाब से ज़्यादा न हो। इसके लिए वजन देखते रहना ज़रूरी है।

वजन ज़्यादा हो जाने से न सिर्फ मधुमेह बिगड़ता है बल्कि उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, गठिया, टाँगों की शिराओं का फूलना जैसी तकलीफें हो जाने की संभावना भी बढ़ जाती है। जबकि वजन ठीक कर लेने से नॉन इंसुलिन डिपेंडेंट डायबिटीज में काफी फायदा पहुंचता है। दूसरे रोग होने की आशंका भी घट जाती है। इसके लिए आप अन्यत्र दिये गए वजन चार्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

✔ अपने साथ यथेष्ट मात्रा में इंसुलिन/दवाएं अवश्य ले जाएं। किसी दूसरे देश जाना हो तो यह सावधानी और भी ज़रूरी हो जाती है। हर देश में अलग–अलग ब्रॉंड नाम से दवाएं बिकती हैं और कुछ देशों में हर दवा मिलती ही नहीं।

✔ इंसुलिन पर हों, तो उसे पूरी सावधानी से अपने साथ रखें। ज़्यादा तापमान इंसुलिन को बिगाड़ सकता है।

✔ एक देश से दूसरे देश में जाने पर समय बदल जाता है। इसका ख्याल रखें। यह न हो कि इस चक्कर में आप समय से इंसुलिन की खुराक न ले पाएं।

✔ अपने साथ डायबिटीज आइ–डेंटीफिकेशन कार्ड अवश्य रखें। उस पर चल रही दवा का नाम और खुराक लिखकर रखें। डाक्टर की पर्ची भी साथ ले कर चलें।

✔ साथ में थोड़ा ग्लूकोज, टॉफी या कुछ मीठा ज़रूर रखें ताकि यदि

हाइपोग्लाइसीमिया हो जाए, तो आप उन्हें ले सकें।

✔ जाने से एकदम पहले नए जूते न खरीदें। वे दिक्कत दे सकते हैं।

✔ ज़्यादा चलना पड़े और पैरों पर छाले पड़ जाएं तो उनकी देखभाल के लिए समय अवश्य निकालें।

✔ जहाँ जा रहे हों, वहाँ की भाषा में इतना कह सकना ज़रूर सीख लें कि 'मैं मधुमेही हूं।' या 'मुझे डाक्टर के पास ले चलें।

शादी–ब्याह, पार्टी या रेस्तराँ में जाना हो तो.....

पारिवारिक–सामाजिक जीवन में ऐसे बहुत से अवसर आते हैं, जब भोज के लिए बाहर जाना होता है। ऐसे अवसरों पर अपने खानपान का पूरा ध्यान रखें। दूसरों और ख़ुद को बुरा न लगे, इसलिए ऐसी स्थितियों से कतराएं भी नहीं। जो खाद्य और पेय पदार्थ आप उपयुक्त पाएं, उनका चयन कर पूरा आनंद लें। सलाद प्रायः हर जगह मिलता है। फलाहार भी कर सकते हैं।

खुश रहें

जीवन में जो कुछ पाया है, उसमें खुश रहें। क्षण आते है जब मन झुंझला उठता है, अवसाद गहराने लगता हैं, कुछ अच्छा नहीं लगता। यह मानसिक क्लेश, तनाव मधुमेह के नियंत्रण में आड़े आता है। उससे रोग ज़्यादा उग्र हो जाता है। अतः उससे बचिए। ज़रूरत पड़े तो किसी प्रियजन का सहारा ले लीजिए। डॉक्टर से मिलिए। मधुमेही संस्थाओं से जुड़िए। दूसरे मधुमेहियों को जानिए। जीवन में बहुत कुछ है, खुश रहने के लिए।

❑❑

इस्लाम का विशेष दृष्टिकोण

इस्लाम जिस तरह किसी भी जमाने में और किसी भी माहौल के दरमियान रहनुमाई से कासिर (विवश) नहीं रहा है। आज भी विवश नहीं है, और हालात चाहे आज भी हजार दर्जा बदतर हो जाये, हमारी रहनुमाई के लिये अल्लाह की किताब और रसूल का आदर्श बिल्कुल काफी रहेंगें, "चाहे मुजरिम लोग नापसन्द करें।" हमारा काम दुनिया में न किसी बहुसंख्यक के आगे झुकना है न किसी हुकूमत के सामने सर झुकाना, न किसी भी मख़लूक़ की रज़ाजूई (प्रसन्नता प्राप्ति) का कलिमा पढ़ना, हमारा मिशन तो अव्वल से आखिर तक अल्लाह की रजाजूई करना है, और सियासात हों या मआशियात (राजनीति अथवा अर्थशास्त्र) रहन सहन हो या संस्कृति, जीवन के हर विभाग में और हर आन मुसलमान रहना। हम अल्लाह की सारी मख़लूक के साथ शान्ति और सहयोग चाहते हैं, और इन्सान तो इन्सान, चरिन्द, परिन्द, पेड़, पत्थर, जड़ पदार्थ सबके इक़ अदा करने की तअलीम हमको मिली है, तअस्सुब (पक्षपात) हमारी शरीअत में नाजायज़ है और छूत–छात का तो हमको वहम भी नहीं आ सकता है, लेकिन विशेष अक़ायद के साथ–साथ हमारा एक मख़सूस (विशेष) कलचर एक विशेष संस्कृति भी है जिससे हम किसी कीमत पर भी दस्त बरदार नहीं हो सकते और दूसरों में हम जम (विलीन) किसी भी हाल में नहीं हो सकते, इत्तिहाद व इनजिमाम (एकता और विलीन करना) के बीच अन्तर जमीन व आसमान का है, हमारा विशेष दृष्टिकोण है जिसे हम न किसी की मुरव्वत में छोड़ सकते हैं न किसी के दबाव में आकर।

(मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी)

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

करीब सप्ताह भर पहले संसद के निचले सदन नेशनल एसेम्बली ने इसे पारित किया था। इस 18वें संविधान संशोधन विधेयक के तहत कई–कई सारे महत्वपूर्ण अधिकार राष्ट्रपति से प्रधानमंत्री के हाथ में आ जाएंगे। इसमें 102 धाराएं हैं। विधेयक के अंतर्गत पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ, जो नवाज शरीफ़ की निर्वाचित सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति बने थे, के सभी कदमों को अवैध घोषित कर दिया है।

❑❑

क़िस्त : 24

भारत का संक्षिप्त इतिहास

पिछले अंक से आगे.....

मुस्लिम काल

— सै0 अबु ज़फर नदवी

मुहम्मद मुअज़्ज़म शाह आलम बहादुर शाह प्रथम

औरंगजेब के बड़े लड़के शहजादा मुअज़्ज़म को जब बाप के मरने की सूचना मिली तो पंजाब से दिल्ली की तरफ चला। दकिन से आलमगीर का दूसरा लड़का शहज़ादा आजम भी फौजी तैयारी के साथ रवाना हुआ। मुअज़्ज़म शाह ने सुलह की बहुत कोशिश की मगर लड़ाई से न बच सका। आखिर दोनों में सख़्त लड़ाई हुई और आज़म के मारे जाने पर मामला तय हुआ। मुअज़्ज़म "शाह आलम बहादुर शाह" की पदवी (लक़ब) से तख़्त पर बैठा। उदयपुर और जोधपुर के शासकों ने, जो हर नये बादशाह के होने पर बागी होने के आदी हो गये थे, पहले की तरह बग़ावत शुरू कर दी। मजबूरन शाह आलम ने उन का दमन ज़रूरी समझकर अपने लड़के शहज़ादा अज़ीमुश्शान और मुनअम खाँ सेनापति को भेजा। बाग़ियों ने विवश होकर आज्ञा पालन स्वीकार कर लिया और मुनअम खाँ की सिफारिश से उनको माफी दी गई।

शाह आलम के छोटे भाई काम बख़्श ने 1707ई0 (1119हि0) में बीजापुर और हैदराबाद से, जो उसकी जागीर में था, कुछ दरबारियों की ग़लत सलाह से भाई से लड़ने के लिए रवाना हुआ। आखिर वह इस लड़ाई में मारा गया। उस की जगह दाऊद खाँ नामक अपने एक दरबारी को दकिन का सूबेदार बना कर शाह आलम वापस हुआ। अभी बुरहानपुर ही में था कि राजपूतों की बग़ावत की सूचना मिली जिन को एक अमीर (अधिकारी) सैफ़ खाँ ने कामबख़्श की तरफ़ से सहायता पर तैयार किया था, शाह आलम उज्जैन से होकर अजमेर में आकर ठहरा और हर तरफ़ फौजें भेजीं। जब इन राजाओं ने मुफ़्त की बला अपने सिर पर देखी तो माफ़ी माँगी और दयालु बादशाह ने सब के गुनाह माफ़ कर दिये।

1708ई0 (1120हि0) में सिखों के गुरु गोविन्द सिंह के देहान्त पर "बन्दा" नामी एक व्यक्ति ने गुरु गोविन्द का दावा किया और एक बड़ा जत्था इकट्ठा कर के सरहिन्द पर क़ब्ज़ा कर लिया और फिर यह लोग सतलज पार तक धावा बोलने लगे। आखिर बादशाह ने शहज़ादा रफ़ीउश्शान को उनकी रोक थाम के लिए भेजा। शाहजादे ने उनको पै दर पै पराजय देकर एक किले में किलाबन्द कर दिया मगर बन्दा भेस बदल कर भाग निकला और जत्था बिखर गया। शाह आलम लाहौर आ गया और उसी जगह 1711ई0 (1123हि0) में उसका देहान्त हो गया।

जहाँदार खाँ और फर्रुख़ सेर

शाह आलम का लड़का शहज़ादा मुअज़्ज़ुद्दीन "जहाँदार शाह" की पदवी से अपने भाई भतीजों को ठिकाने लगा कर हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ लेकिन पटना (बिहार) में अज़ीमुश्शान का लड़का फर्रुख़ मौजूद था। उसने बारहा के सादात की सहायता से आगरा के पास बड़ी सख़्त लड़ाई के बाद जहाँदार शाह पर 1712ई0 (1124हि0) में विजय प्राप्त की उसने बारहा के सादात में से सैय्यद अब्दुल्लाह खाँ को कुतुब मलिक और उनके भाई सय्यद हुसैन अली खाँ को अमीरुल उमरा (सरदारों का सरदार) की उपाधि दी और फीरोज़ जंगबहादुर के लड़के चीन कुलैच खाँ को निज़ामुल मुल्क फतह जंगी की पदवी देकर दकिन की सूबेदारी प्रदान की। हैदराबाद दकिन के निज़ाम की सल्तनत की बुनियाद उन्हीं से पड़ी। पहले की तरह बादशाह के तख़्त पर बैठते ही जोधपुर का राजा बागी हो गया। बादशाह ने सैय्यद हुसैन अली को उसके दमन के लिये भेजा जिसने पराजय पर पराजय देकर राजा को पहाड़ों में भाग जाने पर विवश कर दिया। उसने माफ़ी माँगी और सालाना राजस्व कर (ख़िराज) अदा किया। सैय्यद हुसैन उसके लड़के को साथ लेकर दिल्ली वापस आया।

1714ई0 (1126हि0) में बन्दा ने फिर सिर उठाया और सिखों के पहाड़ी समुदाय को लेकर पंजाब के गाँव लूटने लगा और इस निर्दयता और क्रुरता से प्रजा को सताया कि सारा पंजाब चीख़ उठा। बादशाह ने लाहोर के हाकिम अब्दुस्समद खाँ को उनके दमन के लिए रवाना किया। उसने उन सब को एक किले में इस तरह से घेर लिया कि भूख से मरने लगे। मजबूरन बन्दा ने अपने को हवाले कर दिया। वह अपने साथियों के साथ दिल्ली भेजा गया जहाँ उसको कत्ल कर दिया गया।

बारहा के सादात का ज़ोर बढ़ गया था। वे सल्तन के कारोबार पर हावी हो गये थे। दरबार के पुराने अमीर तक स्तब्ध (दमबख़ुद) थे। बादशाह भी उनसे तंग आ गया था। सैय्यद अब्दुल्लाह भी इस मामले को समझ गये। 1718ई0 (1141हि0) में फर्रुख़ को कैद कर दिया और उसी कैद में वह मार डाला गया और शाह आलम बहादुर के पोते "रफ़ीउद्दर्जात" को तख़्त पर बिठाया। तीन मास के बाद टिक की बीमारी में बादशाह का देहान्त हो गया। उसके भाई "रफ़ीउद्दौला" को बादशाह बनाया लेकिन दुर्भाग्य से दुर्व्यवस्था फैल गई और सभी सूबेदार आज़ादी का सपना देखने लगे।

मुहम्मद शाह

सैय्यदों ने मिर्ज़ा रौशन अख़्तर को, जो बहादुर शाह का पोता था, मुहम्मद शाह की उपाधि देकर दिल्ली का बादशाह बनाया और निज़ामुल–मुल्क को मालवा का हाकिम बनाकर दिल्ली से विदा कर दिया। जब हर तरफ से सैय्यदों को इतमिनान हो गया तो निज़ामुलमुल्क के पीछे पड़ गये। सैय्यद दिलावर अली और आलम खाँ दो सरदारों को फौज देकर निज़ामुलमुल्क ने उन दोनों को पराजित किया और दकिन पर क़ब्ज़ा कर लिया दूसरी लड़ाई में सैय्यद हुसैन और अब्दुल्लाह मारे गये। बादशाह ने आज़ादी तो प्राप्त करली मगर विलास तथा आमोद प्रमोद (ऐशोइशरत) में ऐसा फंसा कि सल्तनत के तमाम कारोबार से बेख़बर हो गया। दकिन से निज़ामुल मुल्क को बुलाकर "आसिफ़ जाह" का ख़िताब (पदवी) प्रदान की। मगर आसिफ़जाह ने देखा कि यहाँ रहना बादशाह की उपेक्षा के कारण लाभकारी न होगा इसलिए दकिन वापस चला गया। मुल्क की अव्यवस्था से लाभ उठाकर मराठे फिर शक्तिशाली हो रहे थे और साहूजी के मंत्री बालाजी पेशवा की होशियारी से बड़ी शक्ति पैदा करके छापे मारने लगे थे। निज़ामुलमुल्क के दकिन पहुंचते ही बालाजी ने सुलह कर ली और अपना ध्यान गुजरात और मालवा की तरफ़ कर दिया और लूट घसोट कर उन मुल्कों को तबाह कर दिया और अन्त में उन पर क़ब्ज़ा कर लिया।

ईरान का बादशाह उस समय नादिर दुर्रानी था। कुछ सरदार उससे बागी होकर पंजाब चले आये। नादिर ने लिखा कि उनको अपने मुल्क से निकाल दो या बन्दी बनालो मुहम्मद शाह ने इस की कुछ परवाह न की 1738ई0 (1152हि0) में नादिरशाह ने मुग़ल सल्तनत से काबुल फिर सिन्ध को ले लिया और पंजाब को पार करके दिल्ली की तरफ़ बढ़ा। मुहम्मद शाह भी लड़ने के लिए तैयार हुआ परन्तु आसिफ़ जाह निज़ामुलमुल्क की कोशिश से करोड़ों रुपया पर सुलह हो गयी। मगर अवध के सूबेदार बुरहानुल मुल्क सआदत खाँ के कहने से नादिर शाह दिल्ली आ पहुंचा और कुछ सिपाहियों की बग़ावत से शहर में ग़दर मच गया। सात रोज तक दिल्ली में क़त्ले आम और लूटमार मची रहीं आखिर नादिर शाह 15 करोड़ नक़द, कोहेनूर हीरा और शाहजहाँ के समय का बना हुआ तख़्ते–ताऊस लेकर ईरान वापस चला गया। चन्द साल के बाद उस का देहान्त हो गया और काबुल की हुकूमत उस के सेनापति अहमदशाह अबदाली के हाथ में आ गयी जिसने पंजाब पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस प्रकार हिन्दुस्तान में मुग़ल राज्य उन क्षेत्रों से बेदख़ल हो गया जहाँ से उसकी फौज के लिए अच्छे सिपाही हाथ आते थे।

1748ई0 (1161हि0) में मुहम्मद–शाह का देहान्त हो गया। उसका लड़का अहमदशाह चन्द साल के लिए बादशाह बना रहा 1753ई0 (1197हि0) में गाजियुद्दीन खाँ वज़ीर ने उसकी आँखें निकलवा दीं और जंहादारशाह के लड़के को आलमगीर द्वितीय का ख़िताब देकर तख़्त पर बैठा दिया। वज़ीर ने पंजाब पर भी

क़ब्ज़ा कर लेना चाहा लेकिन अहमदशाह अबदाली तुरंत पंजाब आ गया और वहाँ से दिल्ली आ पहुंचा और एक रूहेले सरदार नजीबुद्दौला खाँ को अपना प्रतिनिधि बना कर वापस हुआ। गाज़ियुद्दीन ने मराठों को बढ़ावा देकर दिल्ली और पंजाब पर उनका क़ब्ज़ा करा दिया। यह देखकर नजीबुद्दौला रुहेल खण्ड चला गया और पंजाब के पठान हाकिम काबुल पहुंचे। अहमदशाह अबदाली यह देखकर मराठों के दमन के लिए हिन्दुस्तान रवाना हुआ। ग़ाजियुद्दीन को जब यह मालूम हुआ तो उसने आलमगीर द्वितीय को क़त्ल कर डाला और खुद भाग कर सूरजमल नामी एक जाट के पास चला गया।

मराठों का नया युग और पानीपत की लड़ाई

शिवाजी का पोता राजा साहू, जिस को बहादुरशाह ने उसके वतन वापस कर दिया था विलास प्रिय और काहिल निकला। इस लिए सल्तनत की असली बागडोर उस के मंत्री बालाजी के हाथ में आ गई जिस की उपाधि पेशवा थी। उसने भीतरी व्यवस्था ठीक करके उन जागीरदारों का दमन किया जो शाही स्थानों पर डाका डालते थे। अमीरुल उमरा सैय्यद हुसैन ने दस लाख सालाना और आवश्यक्ता के समय 15 हजार सिपाही मुहय्या करने के बदले में दकिन की पुरानी परम्परा के अनुसार राजस्व कर का चौथाई कमीशन के तौर पर मराठों को देना स्वीकार किया।

1719ई0 (1132हि0) में बालाजी के बाद उसका लड़का बाजीराव पेशवा हुआ। उसने निजामुलमुल्क के होते हुए दकिन में विजय मार्ग बन्द देख कर गुजरात, मालवा, माड़वार और नागपुर की तरफ़ बढ़ा और हर जगह सफ़ल रहा। 1740ई0 (1153हि0) में उसके लड़के बालाजी राव ने जब अपने बाप के बाद सल्तनत की बागडोर संभाली तो सल्तनत इतनी शक्तिशाली हो गई थी कि दकिन के निजाम से अहमदनगर जिला ले लिया और उत्तरी भारत में गाजियुद्दीन शाह की सहायता से दिल्ली और पंजाब पर क़ब्ज़ा कर लिया।

अब पेशवा दिल्ली की शहंशाही का सपना देखने लगा। उस समय अहमदशाह अबदाली पंजाब पहुंच गया था। मराठे हट कर यमुना पार आ गये। अबदाली भी आक्रमण करता हुआ सिर पर आ पहुंचा और इस ज़ोर का हमला किया कि मराठों के एक दस्ते के सिवा सब मराठे मारे गये। पेशवा को जब यह मालूम हुआ तो बहुत पेचोताब खाया और बदला लेने के लिए "सदा शिवभाव" एक बहादुर अफसर की कमान में तीन लाख फौज रवाना किया। इस फौज के पास दो सौ तोपें थीं जो इब्राहीम खाँ अफसर तोप खाना के अधीन थीं। पानीपत के मैदान में 1761ई0 (1174हि0) में उन दोनों को मुकाबला हुआ। इब्राहीम खाँ, जिसने फराँसीसी ढंग की गोलाबारी में बड़ी महारत प्राप्त की थी, अपने तोप खाने से एक क़ियामत बरपा कर दी लेकिन अबदाली ने अपने प्रमुख दस्ते से मराठा सेना के पिछले भाग पर इस जोर के साथ हमला किया कि मराठों का मैदान में ठहरना कठिन हो गया और आखिर भाग निकले। लगभग दो लाख मराठे मारे गये और कोई नामी सरदार जिन्दा नहीं बचा। पेशवा इसी ग़म में मर गया और उसका लड़का माधोराव पेशवा हुआ। अबदाली दिल्ली पहुंचा और शाहआलम द्वितीय को बादशाह बना कर वापस चला गया। शाहआलम उन दिनों बिहार पर क़ब्जा करना चाहता था। जब उस को किसी तरफ़ से कोई सहायता न मिली तो इलाहाबाद में दस वर्ष अंग्रेजों से पेंशन लेकर ठहरा रहा। फिर मराठों की सहायता के भरोसे दिल्ली आया लेकिन गुलाम क़ादिर रुहेला ने, जो दिल्ली पर काबिज हो गया था, शाह आलम की आँखे निकाल लीं। आखिर मराठों ने गुलाम कादिर के पंजे से छुटकारा दिला के बादशाह को अपने कब्जे में रखा। इस प्रकार वह बहुत दिनों तक मराठों पर आश्रित रहा। 1804ई0 (1219हि0) में अंग्रेजों ने मराठों से छुटकारा दिलाकर बादशाह को अपने कब्जे में रखा। 1804ई0 (1219हि0) में अंग्रेजों ने बादशाह की पेंशन मुकर्रर कर दी। अब हिन्दुस्तान की बादशाही अंग्रेजों के हाथों में आई और शाहआलम केवल दिल्ली का बादशाह होकर रह गया।

(जारी....)

❑❑

तहरीके नदवतुल उलमा और दीन व मिल्लत की खिदमत

- सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

नदवतुल उलमा की तहरीक (आन्दोलन) जिस वक़्त शुरूअ़ की गई थी, हिन्दोस्तानी मुसलमान कदीम व जदीद के दो तबको (वर्गो) में हिचकोले ले रहा था। एक वर्ग पुराने ढंग की तालीम और मसलक (धर्म) से बाल बराबर हटने को दीन में तहरीफ़ (अदल बदल) और बिदअत (दीन में नई बात) समझता था तो दूसरा वर्ग यूरोप की हर नई चीज को एहतिराम की निगाह से देखता था और उसे हर ऐब से पाक समझता था। इन दोनो ग्रुपों के बीच फिक्र व मिअ़यार का तज़ाद था अर्थात चिन्तन तथा मापदण्ड (कसौटी) में विलोमता थी और जिस तरह वह दो इन्तिहाई सिरो पर थे उस की तस्वीर अकबर इलाहाबादी ने इस शिअ़र में खींची है:

इधर यह जिद है कि
लेमन भी छू नहीं सकते
उधर यह रट है कि
साक़ी सुराहिये मै ला

इस खलीज (खाड़ी) को पाटने के लिये नदवतुल उलमा का कियाम अमल में आया (स्थापना हुई) और वह इस में कामयाब (सफल) रहा। नदवतुल उलमा ने इस्लामी और मगरिबी सकाफत (संस्कृति) दीन के उलमा और माडर्न ग्रूप के बीच पुल का काम किया और एक ऐसी मुतवाजिन (सन्तुलित) फिक्र पेश की जो कदीम व जदीद के महासिन (गुणों) की जामिअ़ (संग्रहकर्ता) थी और नदवतुल उलमा के बानियो (संस्थापकों) के अलफाज़ में "उसूल व मकासिद में सख़्त और बेलौच (मौलिक सिद्धान्तों तथा उद्देश्य में कठोर) और फरअ़ व वसाइल (शाखाओं तथा साधनो) में लचकदार थी।

नदवतुल उलमा आन्दोलन केवल एक समाज सुधार आन्दोलन नहीं है अपितु वह एक स्थायी चिन्तन समुदाय है जिस का अनुकरण हर उस देश को करना चाहिये जो आधुनिक तथा प्राचीन के युद्ध में ग्रस्त है।

नदवतुल उलमा के सपूतों ने इस्लाम के परिचय तथा प्रचार, इस्लामी संस्कृति के प्रचार व प्रसार, सीरते नबवी (नबी की जीवनी) का संकलन, इस्लाम की कीर्तियों (कारनामों) और उस की शिक्षाओं को नवीन वैज्ञानिक तथा साहित्यक शैली में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नदवतुल उलमा के सपूतों ने एक ऐसा पाठ्यक्रम भी तय्यार किया जो समकालीन आवश्यकताओं को पूरा कर सके और प्रारंभिक शिक्षा स्तर से उच्चतर शिक्षा तक के विभिन्न पाठ्यक्रमों के अनुकूल हो। नदवतुल उलमा ने पश्चिमी स्वभाव पश्चिमी चिन्तन आक्रमण, इस्लाम के विरोधी आन्दोलन कादियानियत, मसीहीयत, नवीन विकृत विचारों के रोक तथा मुसतशरिकीन (मसीही मिशन के विद्धानों) के फैलाए हुए इस्लाम विरुद्ध शंकाएं, आशंकाएं, और अरब संसार के धर्म विमुखता के सम्बन्ध में भव्य रोल अदा किया है।

नदवतुल उलमा के महान विद्धानों ने शिक्षा तथा लाभदायक रचनाओं की सेवाओं के साथ-साथ इस्लामी समुदाय के पथप्रदर्शन का कार्य भी किया। उन्होंने ने साहित्य इस्लामी इतिहास तथा इस्लामिक विचार पर वैज्ञानिक तथा साहित्यक शैली में पुस्तकें रचीं जो इस्लामिक देशों में बहुत पसन्द की गईं साथ ही समकालीन फित्नों (विकृत आन्दोलनों) के विरुद्ध आवाज़ उठाई चाहे वह अरब कौमीयत (अरब राष्ट्रीयता) हो जो वास्तव में अधर्म का निमंत्रण था। या हिन्दुत्व (हिन्दी कौमीयत) आन्दोलन हो या भाषिक पक्षपात हो या साँस्कृतिक ज्येष्ठता तथा पूरबी व पश्चिमी सभ्यता का तनाव हो उन का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के साथ कर्म-स्थल में भी, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड,

शेष पृष्ठ 22

किस्त 25

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

– इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दावर	शासक	दरायत	मीमाँसा	दर्सगाह	पाठशाला
दाइर	प्रस्तुत	दरामद	आयात	दरसी किताब	पाठ्य पुस्तक
दाइरः	वृत्त	दरामद बरामद	आयात निर्यात	दुरुश्त	कठोर
दाइरा नुमा	वृत्ताकार	दरबार	राजसभा	दुरुश्त ख़ू	क्रूर
दाइम	शाश्वत	दरबान	द्वारपाल	दर्क	ज्ञान
दाइमी	शाश्वत	दरवेश	उपस्थिति	दरकार	आवश्यकता
दबाज़त	मोटाइ	दर्ज	अंकित	दरमान	उपचार
दबदबा	प्रताप	दर्जा	श्रेणी	दरमान्दगी	विवशता
दबीज़	स्थूल	दर्जा बन्दी	वर्गीकरण	दरमान्दा	विवश
दज्ल	कपट धोखा	दर्ज–ए–हरारत	तापमान	दरमियान	माध्य
दखानी	धुवाँ	दरख्शाँ	दिव्य	दरमियानी	माध्यमिक
दुखानी	धुवें वाला	दरख्वास्त	प्रार्थना पत्र	दिरंग	विलम्ब
दुख़तर	कन्या	दरख्वास्त दिहिन्दा	प्रार्थी	दरोग	झूठ
दख़्ल	प्रवेश	दरख़ुर	योग्य	दरोग़गो	झूठा
दख्ल दिहानी	अधिकार प्रदायन	दर्द	पीड़ा	दरोग़गो	मिथ्या भाषी
दखील	अधिपति	दर्दमन्दी	दयालुता	दरवेश	साधू
दर	बीच	दर्स	पाठ	दरया	नदी
दर	द्वार	दुरुस्त	ठीक		
दराज़	लम्बा	दुरुस्त	उचित		
दराज़ी	लम्बाई	दुरुस्ती	सुधार		

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

भारत को 45 लाख पाक को एक अरब

वाशिंगटन! मुम्बई हमलों के बाद अमेरिका से उच्च स्तरीय प्रशिक्षण के भारत के आग्रह के बीच ओबामा प्रशासन ने काँग्रेस से भारत को दिए जाने वाले आतंकवाद विरोधी बजट को वित्त वर्ष 2011 के दौरान दोगुना कर 45 लाख डॉलर करने को कहा है। वहीं उसने पाकिस्तान के लिए इस मद में 1.2 अरब डॉलर देने को कहा है।

अमेरिका विदेश मंत्रालय में आतंकवाद विरोधी समन्वयक डेनियल बेजामिन ने काँग्रेस की एक समिति के सामने कहा कि मुम्बई हमले के बाद अमेरिका से उच्च स्तरीय प्रशिक्षण के भारत के आग्रह के बाद ओबामा प्रशासन ने यह फ़ैसला किया है। मुम्बई हमलों में 166 से भी ज़्यादा लोग मारे गये थे, जिनमें से छह अमेरिकी नागरिक थे। बेंजामिन ने कहा कि हमारे वित्त वर्ष 2011 के बजट में भारत को दिया जाने वाला आतंकवाद विरोधी बजट लगभग दोगुना करके 45 लाख डॉलर कर दिया जाएगा, ताकि भारत सरकार बढ़ती राजनीतिक माँग को पूरा कर सके। भारत में मुम्बई हमलों के बाद और ज़्यादा उच्च स्तरीय प्रशिक्षण की माँग उठ रही है। उन्होंने कहा कि आतंकवाद विरोधी सहायता (एटीए) अमेरिका के आतंकवाद निरोधक क़ानून नियामन क्षमता संवर्द्धन कार्यक्रम का एक हिस्सा है और अमेरिका के सहयोगी देशों ने पिछले एक साल में इसमें कई ठोस सफलताएं पाई हैं। बेंजामिन ने कहा कि ओबामा प्रशासन की ओर से पाकिस्तान आतंकवाद निरोधक क्षमता कोष के लिए वित्त वर्ष 2011 में 1.2 अरब डॉलर की माँग की गई है।

9/11 के संदिग्ध को मुआवजा देगा ब्रिटेन

लंदन! ब्रिटेन उस अल्जीरियाई पायलट को मुआवजा देने को तैयार है जिसे अमेरिका पर 11 सितम्बर 2001 को हुए आतंकी हमले में शामिल होने के गलत आरोप में गिरफ्तार कर पाँच महीने के लिए जेल में डाल दिया गया। लोत्फी रायसी को अमेरिका के न्यूयार्क और वाशिंगटन पर हुए आतंकवादी हमले के 10 दिन बाद गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी के बाद उसे अमेरिका को प्रत्यर्पित करने की धमकी दी गई और कड़ी सुरक्षा वाली जेल में रखा गया। अमेरिकी पुलिस का मानना था कि आतंकवादी संगठन अलकायदा की हमले की साजिश में रायसी का हाथ था। हालाँकि रायसी के खिलाफ लगे आरोप बेबुनियाद साबित हुए जिसके बाद उसे रिहा कर दिया गया। आतंकवादी साजिश में नाम आने के कारण हुई बदनामी से सभी एयरलाइन कंपनियों ने उसे काली सूची में डाल दिया।

बाल ठाकरे की तुलना हाफिज सईद से

इस्लामाबाद! पाकिस्तान ने उसके खिलाफ आग उगलने वाले शिवसेना सुप्रीमो बाल ठाकरे की तुलना मुम्बई हमले के मास्टरमाइंड जमात–उद–दावा प्रमुख हाफिज मुहम्मद सईद से की है। पाक दौरे पर गए भारतीय पत्रकारों के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात के दौरान जब वहाँ के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अब्दुल बासित से पूछा गया कि क्यों इस्लामबाद ने सईद के खिलाफ कार्रवाई नहीं की जबकि पुख्ता सबूत दिए। इस पर बासित ने कहा, 'मैं हाफिज सईद के बारे में ज़्यादा नहीं जानता। हमने उसे गिरफ्तार किया। क्या आपने पाकिस्तान के खिलाफ घृणास्पद भाषण देने के लिए बाल ठाकरे को गिरफ्तार किया?

जरदारी के व्यापक अधिकार छिनें

इस्लामाबाद! पाकिस्तान की संसद के ऊपरी सदन सीनेट में दो तिहाई बहुमत से बहुचर्चित संविधान सुधार विधेयक के पारित किए जाने के साथ ही राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी व्यापक अधिकारों से वंचित हो गए हैं।

शेष पृष्ठ 34